नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 057
दि. 29.11.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

45 साल बाद बेटा लौटा घर: एक पिता की बेची गई ज़मीन, एक मां का टूटता इंतज़ार और भीलवाड़ा की मिट्टी में गूंजती वह पुकार जो आखिरकार सुन ली गई

(जीएनएस)। भीलवाड़ा के लक्ष्मीपुरा गांव ने उस दिन ऐसी हलचल देखी, जिसे बोली-बानी में लोग अब भी चमत्कार कहकर याद कर रहे हैं। सुबह की शांत हवा ढोल-नगाड़ों की आवाज़ से भर गई थी, गलियों में भीड़ जमा हो गई थी और हर किसी की आंखों में एक ही सवाल तैर रहा था—क्या सचमुच उदय सिंह लौट आए हैं? क्या वह उदय सिंह, जो 1980 में घर से निकले थे और फिर दुनिया की किस राह पर खो गए, किसी को नहीं पता चला? गांव में यह खुसरफुसर फैलते ही मानो पूरा समय नदी की धारा उल्टा बहने लगी हो।

उदय सिंह रावत, जो कभी अपनी जवानी में कमाने की चाह में घर से निकले थे, एक दुर्घटना में अपनी याददाश्त खो बैठे थे। उनके परिजन उन्हें ढूंढते-ढूंढते गुजरात से लेकर राजस्थान के अनेक शहरों और गांवों तक गए, रिश्तेदारों के घरों में पूछताछ की, पोस्टर लगाए, मंदिरों में माथा टेका और यहां तक कि उनका पिता बेटे की तलाश में अपनी जमीन तक बेचता चला गया। वह हर पगडंडी पर बेटे का नाम पुकारता रहा, हर राहगीर की आंखों में उम्मीद का एक कण ढूंढता रहा, लेकिन उसके हाथ खाली रहे। समय की रफ्तार इतनी तेज थी कि खोजने की कोशिशें कमजोर पड़ने लगीं, पिता की रीढ़ भी झुक गई और मां की आंखों में आस की आग इतनी धीमी हो गई कि वह केवल राख-सी रह गई।

धीरे-धीरे गांव का हर निवासी मान चुका था कि उदय सिंह शायद अब इस दुनिया में नहीं हैं। छोटे भाई को तो उनकी धुंधली सी आकृति ही याद थी—भाई का कंधा, मुस्कुराहट, और बस इतना सा आभास कि परिवार में कभी कोई बड़ा भाई था। लेकिन

किस्मत के तरीके मनुष्य के अनुमान से कहीं अलग होते हैं। जब सरकार की SIR प्रक्रिया के कारण दस्तावेज़ सत्यापन और पहचान की आवश्यकता सामने आई तो उदय सिंह अपने पुराने स्कूल पहुंचे, जहां कभी उनके नाम की हाजिरी लगती थी। एक साधारण-सा टीसी लेने आए व्यक्ति के चेहरे में प्रधानाध्यापक ने एक पुरानी जानी-पहचानी रेखा देखी। नाम दर्ज था, उम्र मेल खा रही थी, हाव-भाव पुराने से लगते थे। उन्होंने कुछ प्रश्न किए, कुछ उत्तर मिले, और उनके भीतर वर्षों पुरानी एक स्मृति जीवित हो उठी। स्कूल ने परिवार से संपर्क किया। सूचना गांव पहुंची तो किसी को भरोसा नहीं हुआ। परिजन समझ नहीं पा रहे थे कि इतने साल बाद कैसे कोई यह कह सकता है कि वह व्यक्ति उनका बेटा ही है। फिर भी, मन ने कहा—जाकर देखना चाहिए। जब वे पहुंचे और मां ने कांपते हाथों से उस आदमी के चेहरे को स्पर्श किया, तभी मां के आंसू बह निकले। बूढ़ी पलकों पर वर्षों से बंद पड़ा दुख फूट पड़ा। छोटे भाई ने अपने बड़े भाई के गले लगते ही जैसे अपने बचपन को वापस पा लिया। उदय सिंह की आंखों में वह शर्म, वह संकोच और वह दर्द तैर रहा था जिसे केवल वही समझ सकता था जिसने अपना घर, अपना पहचान और अपनी यादें खो दी हों।

उन्होंने कहा कि दुर्घटना में उनकी स्मृति चली गई थी और जब धीरे-धीरे यादें लौटीं तो डर ने उन्हें रोके रखा। यह डर कि शायद अब कोई पहचान न पाए, कि शायद घर में अब उनके लिए जगह न बची हो, कि शायद घरवाले उन्हें स्वीकार ही न करें। लेकिन समय, परिस्थिति और नीयत ने उनके कदम दोबारा उसी आंगन की ओर मोड़ दिए, जिसमें उनकी मां ने कभी उन्हें झुलाया था।

गांव वालों ने उदय सिंह को घोड़ी पर बैठाया। फूल बरसाए और ढोल बजाते हुए उन्हें घर लाया गया—मानो किसी राजा की वापसी हो रही हो। घर में ढलती उम्र की मां ने दरवाजे पर दीपक जलाया और बेटे के माथे को चूमकर अपनी अधूरी सांसों में फिर नई जान भर ली। पिता की याद तो अब केवल तस्वीरों में रह गई थी, लेकिन उनकी व्याकुल खोज, उनकी बेची गई जमीन और उनके टूटे हुए दिल की टीस आज जैसे हवा में फिर महसूस हो रही थी। इस पूरी घटना ने दिखा दिया कि कभी-कभी एक सरकारी प्रक्रिया, एक दस्तावेज़, एक स्कूल का रिकॉर्ड और एक शिक्षक की सावधानी उन रिश्तों को जोड़ सकती है जिन्हें दुनिया टूट चुका मान चुकी होती है। चार दशक पुराना बिछड़ा रिश्ता वापस उसी दहलीज पर आया, जहां से वह एक सुबह निकल गया था। गांव में केवल खुशी नहीं फैली, बल्कि वह दर्द भी फिर जग उठा जिसे 45 साल किसी ने चुपचाप अपने भीतर दबाकर रखा था।

उदय सिंह की घर वापसी केवल एक व्यक्ति का लौटना नहीं थी—यह उन उम्मीदों का लौटना था जो समय की धूल में दब चुकी थीं। यह कहानी साबित करती है कि दुनिया चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, घर का रास्ता कभी पूरी तरह खोता नहीं। मंज़िल देर से सही, मिल ही जाती है।

राजधानी में जहरीली हवा पर हाईकोर्ट सख्त, याचिका में 'हेल्थ इमरजेंसी' का मुद्दा उठाते हुए तात्कालिक कदमों की मांग

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली एक बार फिर घने प्रदूषण की चादर में कैद है और हवा इतनी जहरीली हो चुकी है कि नागरिकों के स्वास्थ्य पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। इसी चिंताजनक स्थिति को देखते हुए ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 वेलफेयर एसोसिएशन की ओर से महासचिव संजय राणा ने दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर की है, जिसमें वायु प्रदूषण नियंत्रण के लिए तुरंत और ठोस कदम उठाने की मांग की गई है। शुक्रवार को इस मामले पर अदालत ने सुनवाई शुरू कर दी और स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सरकार और संबंधित प्राधिकरणों से जवाब तलब करने की दिशा में संकेत दिए।

याचिकाकर्ता ने अदालत के सामने यह मुद्दा उठाया कि राजधानी की वायु गुणवत्ता लगातार 'खतरनाक' स्तर पर पहुंच चुकी है, लेकिन इसके बावजूद ग्रैप–3 (GRAP-3) के तहत लगाए गए कई प्रतिबंध हटा लिए गए, जिससे हालात और बिगड़ गए। याचिका में कहा गया है कि समय रहते सख्त कदम न उठाए जाने के कारण दिल्ली की हवा एक 'हेल्थ इमरजेंसी' में बदल गई है,

जहां बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों के लिए सांस लेना भी मुश्किल होता जा रहा है। दायर याचिका में यह भी बताया गया है कि जहरीली हवा फेफड़ों पर गंभीर असर डाल रही है और बड़ी संख्या में लोग खांसी, सांस फूलना, एलर्जी, अस्थमा व अन्य श्वसन रोगों से जूझ रहे हैं। अस्पतालों में भी मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया कि प्रदूषण नियंत्रण के मौजूदा सरकारी उपाय केवल कागजों में सख्त दिखाई देते हैं, लेकिन ज़मीनी स्तर पर उनका पालन बेहद कमजोर है।

याचिका में निर्माण और ध्वस्तीकरण से उड़ने वाली धूल, सड़कों पर जमा मिट्टी, वाहनों के उत्सर्जन और औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले धुएं पर कड़ी निगरानी की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। साथ ही खुली जगहों पर कचरा जलाने पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करने की भी मांग की गई है, क्योंकि इससे सीधे तौर पर AQI में भारी गिरावट आती है।

याचिका में अदालत से यह भी अनुरोध किया गया है कि दिल्ली के लिए एक 'कम्प्रिहेंसिव क्लीन एयर एक्शन प्लान' तैयार किया जाए, जिसमें स्पष्ट समयसीमा और चरणबद्ध तरीके से प्रदूषण कम करने के ठोस उपाय शामिल हों। इसमें नियमित मॉनिटरिंग, सख्त प्रवर्तन, उन्नत टेक्नोलॉजी का उपयोग और प्रदूषण फैलाने वाले स्रोतों की पहचान कर त्वरित कार्रवाई के प्रावधान हों।

उच्च न्यायालय ने मामले की गंभीरता को स्वीकार करते हुए कहा कि राजधानी की हवा साफ करना केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि नागरिकों की सुरक्षा और संविधान में दिए गए जीवन के अधिकार का हिस्सा है। अदालत की अगली सुनवाई में यह उम्मीद की जा रही है कि सरकार और संबंधित एजेंसियां अपने कदमों और योजनाओं का विस्तृत ब्यौरा पेश करेंगी।

दिल्ली की जहरीली हवा एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर रही है कि क्या राजधानी हर साल प्रदूषण के इसी चक्र में फंसती रहेगी, या अब सरकार और एजेंसियां मिलकर कोई स्थायी समाधान निकाल पाएंगी।

बस्तर में बड़ी सफलता: 65 लाख के इनामी 10 नक्सलियों का सामूहिक आत्मसमर्पण, झीरम हमले का मास्टरमाइंड भी हथियार डालकर लौटा मुख्यधारा में

(जीएनएस)। जगदलपुर। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में नक्सल विरोधी मोर्चे को शुक्रवार की सुबह एक ऐतिहासिक सफलता मिली, जब जगदलपुर के शौर्य भवन में कुल 10 कुख्यात नक्सलियों ने अपने हथियार डालकर समाज की मुख्यधारा में लौटने का फैसला किया। इन सभी पर मिलाकर 65 लाख रुपये का इनाम घोषित था। आत्मसमर्पण करने वालों में सबसे अधिक चर्चा 25 लाख रुपये के इनामी, झीरम घाटी हमले के मास्टरमाइंड चैतू उर्फ श्याम दादा की रही, जिसने वर्षों तक सुरक्षा बलों के लिए चुनौती बने रहने के बाद आत्मसमर्पण का रास्ता चुना।

बस्तर रेंज के आईजी सुंदरराज पी. की मौजूदगी में हुए इस सामूहिक आत्मसमर्पण ने सुरक्षा एजेंसियों की नक्सल उन्मूलन रणनीति को बड़ा बल दिया है। लंबे समय से दंडकारण्य इलाके में सक्रिय यह समूह पुलिस और केंद्रीय बलों की लगातार बढ़ती दबिश और बदलते सामाजिक माहौल के बीच अंततः हथियार छोड़ने को तैयार हुआ। सबसे अधिक चर्चित चेहरा 60 वर्षीय चैतू उर्फ श्याम दादा रहा। असली नाम गिरी रेड्डी पवन दा रेड्डी, जो तेलंगाना के वारंगल जिले के तुलसापुर गांव का निवासी है, दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का वरिष्ठ सदस्य और दरभा डिवीजन का प्रमुख रह चुका है। झीरम घाटी में हुए कुख्यात हमले सहित

कई बड़े हमलों को दिशा देने वाले चैतू ने अपनी एके-47 रायफल पुलिस के हवाले करते हुए हिंसा का रास्ता छोड़ने की घोषणा की।

इस आत्मसमर्पण में महिला नक्सली सरोज (इनामी 8 लाख) भी शामिल रही, जो डीवीसीएम कैडर की सक्रिय सदस्य थी। इसके अलावा एरिया कमेटी सदस्य भूपेश उर्फ सहायक राम, प्रकाश, कमलेश उर्फ झितरु, जननी उर्फ रयमती कश्यप, संतोष उर्फ सन्नू, नवीन तथा प्रोटेक्शन मिलिशिया की रमशीला और जयती कश्यप ने भी समर्पण किया। ये सभी लंबे समय से बस्तर के अलग-अलग इलाकों में नक्सल गतिविधियों में सक्रिय थे।

आत्मसमर्पण कार्यक्रम के दौरान आईजी सुंदरराज पी. ने बताया कि नक्सल संगठन तेजी से कमजोर हो रहा है और उसकी विचारधारा से मोहभंग बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि नक्सली अब समझ रहे हैं कि बंदूक का रास्ता केवल विनाश देता है, जबकि समाज की मुख्यधारा में लौटने से पुनर्वास, सुरक्षा और सम्मानजनक जीवन का अवसर मिलता है।

उन्होंने कहा कि आज का यह सामूहिक आत्मसमर्पण बस्तर में बदलती सोच, सरकारी प्रयासों और समाज में बढ़ रही जागरूकता का प्रमाण है।

बस्तर में यह आत्मसमर्पण न केवल सुरक्षा बलों के लिए मनोबल बढ़ाने वाला है, बल्कि आने वाले समय में इस क्षेत्र में शांति और विकास के नए रास्ते खोलने वाला एक बड़ा कदम भी माना जा रहा है।

भारत–नेपाल स्वास्थ्य सहयोग को नई गति, काठमांडू में मंत्री–राजदूत की महत्वपूर्ण बैठक में कई मुद्दों पर सहमति

(जीएनएस)। काठमांडू। भारत और नेपाल के बीच दशकों से चले आ रहे घनिष्ठ संबंधों को एक बार फिर नई मजबूती मिली, जब नेपाल की स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मंत्री डॉ. सुधा शर्मा गौतम ने शुक्रवार दोपहर नेपाल स्थित भारतीय राजदूत नवीन श्रीवास्तव से औपचारिक मुलाक़ात की। दोनों नेताओं के बीच यह बैठक न केवल शिष्टाचार भर की थी, बल्कि स्वास्थ्य क्षेत्र में गहरी होती साझेदारी को आगे बढ़ाने की दिशा में बेहद अहम मानी जा रही है।

बैठक की शुरुआत दोनों देशों के बीच मौजूद ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जुड़ाव को रेखांकित करते हुए हुई। स्वास्थ्य मंत्री गौतम ने कहा कि नेपाल–भारत संबंध विश्वास, सहयोग और सहभागिता की ऐसी मिसाल हैं, जो वर्षों से निरंतर मजबूत होते रहे हैं। उन्होंने भारत द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में दिए जा रहे सहयोग—चाहे वह जीवनरक्षक दवाइयों की आपूर्ति हो, चिकित्सकीय प्रशिक्षण हो या अस्पताल निर्माण—के लिए गहरा आभार व्यक्त किया।

मंत्री गौतम ने विशेष रूप से मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं, स्वास्थ्य बीमा का विस्तार, राष्ट्रीय औषध प्रयोगशाला की परीक्षण क्षमता में वृद्धि तथा विदेशों में कार्यरत नेपाली श्रमिकों की स्वास्थ्य सुरक्षा को सरकार की प्राथमिक प्राथमिकताओं में गिना। उन्होंने कहा कि भारत इन क्षेत्रों में पहले भी सहयोग करता आया है और भविष्य में इस साझेदारी को और अधिक व्यापक बनाया जा सकता है।

राजदूत नवीन श्रीवास्तव ने बैठक के दौरान भारत–नेपाल संबंधों की गहराई को रेखांकित करते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच स्वास्थ्य सहयोग मानवीय मूल्यों पर आधारित है। उन्होंने राष्ट्रीय औषध प्रयोगशाला के स्तरोन्नयन के लिए भवन निर्माण, अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरण उपलब्ध कराने और प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करने में सहायता जारी रखने की भारत की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि भारत का प्रयास यह है कि नेपाल की प्रयोगशालाएं अंतरराष्ट्रीय स्तर की हों और देश स्वास्थ्य मामलों में अधिक आत्मनिर्भर बन सके।

बैठक के दौरान दोनों पक्षों में इस बात पर सहमति बनी कि भविष्य में संयुक्त परियोजनाओं को और गति दी जाएगी, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ प्रत्यक्ष रूप से नागरिकों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य अवसंरचना विकास, टेलीमेडिसिन, आपदा प्रबंधन और महामारी नियंत्रण जैसे विषयों पर भी गंभीर चर्चा की गई।

इस मुलाक़ात ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत और नेपाल के बीच संबंध केवल पड़ोसी देशों का रिश्ता नहीं हैं, बल्कि सांझे हितों, साझा संस्कृतियों और एक-दूसरे की समृद्धि के संकल्प से जुड़े गहरे मानवीय संबंध हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में बढ़ता सहयोग आने वाले वर्षों में दोनों देशों के नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में एक बड़ी भूमिका निभाता दिखाई देगा।

सहारनपुर में अंतिम संस्कार जा रहे परिवार पर पलटा ओवरलोड डंपर, सात लोगों की दर्दनाक मौत

(जीएनएस)। सहारनपुर। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में शुक्रवार सुबह एक ऐसा दर्दनाक सड़क हादसा हुआ जिसने पूरे इलाके को शोक में डुबो दिया। दिल्ली–देहरादून राष्ट्रीय राजमार्ग पर बजरी से भरे तेज रफ्तार ओवरलोड डंपर ने नियंत्रण खोते हुए एक कार पर अपनी भीषण ताकत का कहर बरपाया और एक ही परिवार के सात सदस्य वहीं दम तोड़ बैठे। यह हादसा गागलहेड़ी थाना क्षेत्र के सैयद माजरा अंडरपास के पास हुआ।

जानकारी के अनुसार, मृतक परिवार महेंद्र सैनी के गंगोह निवासी साले के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए सुबह अपने परिजनों संग रिश्तेदार राजू सैनी की कार से जा रहे थे। जैसे ही कार को हाईवे किनारे खड़ा किया गया, देहरादून की ओर से आ रहे ओवरलोड डंपर ने मोड़ पर अनियंत्रित होकर सीधे कार पर पलट दिया। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार पूरी तरह दब गई और उसे काटकर ही फंसे हुए लोगों को बाहर निकाला जा सका। पुलिस और राहत टीमों ने क्रेन की मदद से करीब एक घंटे की कठिन मशक्कत के बाद डंपर को हटाकर कार में फंसे सभी शवों को बाहर निकाला। हादसे के बाद डंपर चालक मौके से फरार हो गया। इस दर्दनाक हादसे में महेंद्र सैनी, उनकी पत्नी रानी देवी, बेटे संदीप (24), बेटी जूली (27), चार वर्षीय पोता, दामाद शेखर कुमार (28) और महेंद्र की साली का बेटा विपिन (20) अपनी जान गंवा बैठे। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि संदीप को बाहर निकाला गया था, उसकी सांसें चल रही थीं, लेकिन अस्पताल पहुंचते ही उसने भी दम तोड़ दिया। मृतक परिवार सहारनपुर के मोहद्दीपुर का निवासी था। संदीप सैनी पूर्व मंत्री डॉ. धर्म सिंह सैनी के भाई के अस्पताल में फार्मासिस्ट के रूप में कार्यरत थे। पुलिस अधीक्षक नगर व्योम बिंदल ने बताया कि सभी शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। फरार डंपर चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी गई है। स्थानीय लोगों ने हादसे के बाद ओवरलोड वाहनों पर सख्त कार्रवाई की मांग की है ताकि भविष्य में इस तरह की दर्दनाक घटनाओं को रोका जा सके।

यह हादसा सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों की जिम्मेदारी और नियमों के पालन की आवश्यकता को एक बार फिर से सामने ला रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, तेज रफ्तार, ओवरलोड वाहनों और हाईवे पर उचित नियंत्रण की कमी कभी भी एक पल में कई परिवारों की खुशियों को मातम में बदल सकती है। सहारनपुर का यह हादसा इसी तथ्य का दुखद प्रमाण है। स्थानीय प्रशासन ने राहत कार्यों को तुरंत शुरू कर दिया है और सड़क पर सुरक्षा उपायों को और कड़ा करने की योजना बनाई जा रही है। इस घटना ने सड़क दुर्घटनाओं के बढ़ते खतरे और हाईवे पर ओवरलोड वाहनों के नियंत्रण की आवश्यकता को उजागर किया है। हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों का दुख और गम अद्भुत है, और पूरे जिले में शोक की लहर दौड़ गई है। इस हादसे ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि सड़क सुरक्षा की अनदेखी किसी भी परिवार के लिए भारी कीमत चुकाने वाली हो सकती है।

संपादकीय

सरकारी प्रयासों व जागरूकता में लाएं तेजी

ब्राजील के बेलेम में संपन्न कॉप-30 सम्मेलन में जारी 'जलवायु जोखिम सूचकांक-2026' रिपोर्ट में उल्लेखित आंकड़े भारत से जुड़ी जलवायु संकट की भयावह तस्वीर दिखाते हैं। रिपोर्ट बताती है कि भारत दुनिया में जलवायु आपदाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित पहले दस देशों में शामिल हैं। यह डराने वाली रिपोर्ट बताती है कि पिछले तीन दशक में भारत में आई जलवायु संकट से जुड़ी आपदाओं में करीब अस्सी हजार लोगों को मौत का ग्रास बनना पड़ा। इतना ही नहीं करीब 170 अरब अमेरिकी डॉलर का नुकसान भी देश को उठाना पड़ा है। ये आंकड़े जलवायु संकट के देश पर पड़ने वाले घातक प्रभावों की तस्वीर उकेरते हैं। जो बताते हैं कि इस संकट से उबरने के प्रयासों में और तेजी लाने की जरूरत है। निश्चित तौर पर इस दिशा में यदि युद्ध स्तरीय प्रयास तेज नहीं किए जाते तो भविष्य में परिणाम और घातक हो सकते हैं। ये प्रयास केवल सरकारी स्तर पर ही नहीं, सामाजिक स्तर पर भी तेज करने की जरूरत है। जागरूकता अभियानों में भी तेजी लाने की जरूरत है। इस संकट ने फसलों पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव से हमारी खाद्य श्रृंखला पर भी संकट मंडरा सकता है। हमें 140 करोड़ से अधिक आबादी वाले देश का पेट भरने के लिये इस दिशा में शोध-अनुसंधान के साथ व्यापक किसान जागरूकता कार्यक्रम भी चलाने की जरूरत है। दरअसल, जलवायु संकट के चलते देश में जो ज्यादा नुकसान हुआ है, उसके पीछे लगातार आ रहे चक्रवात, कुछ इलाकों में सूखे और बाढ़ की लगातार पैदा होती स्थितियां हैं। जाहिर इसके मूल में तेजी से बढ़ता वातावरण का तापमान ही है। जिसका मुख्य कारक ग्लोबल वार्मिंग ही है। निश्चित रूप से भारत में जलवायु संकट की स्थिति लगातार विकट होती जा रही है। निर्विवाद रूप से देश के सामने पैदा मौसमी आपदाओं से हमारे विकास में भी बाधा उत्पन्न हो रही है। जो जीविका संकट भी पैदा कर रहा है।

दरअसल, बेलेम में संपन्न कॉप-30 सम्मेलन में जारी की गई 'जलवायु जोखिम सूचकांक-2026' रिपोर्ट उन संकटपूर्ण स्थितियों का भी खुलासा करती है जो जलवायु संकट के कारण पैदा हो रहे हैं। रिपोर्ट बताती है कि पिछले वर्ष भारी बारिश व विनाशक रूप में आई बाढ़ से देश में करीब अस्सी लाख लोग बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। इसमें दो राय नहीं कि भारत सरकार ने जलवायु संकट से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी के समक्ष अपनी प्रतिबद्धता बार-बार जताती है। इस संकट से उबरने के लिये नवीकरणीय ऊर्जा के विकल्प को युद्ध स्तर पर आगे बढ़ाने का प्रयास भी किया है। देश में कार्बन उत्सर्जन को कम करने में नवीकरणीय ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। देश वनों का दायरा को भी बढ़ाने की जरूरत है। विकास देश की प्राथमिकता है, लेकिन यह विकास वनों के विनाश की कीमत पर नहीं होना चाहिए। साथ ही इस दिशा में जो भी कदम उठाये जाएं उनका प्रभाव जमीनी स्तर पर कितना हो रहा है, इस बात का लगातार मूल्यांकन भी जरूरी है। साथ ही रीति-नीतियों को प्रभावी तरीकों से अमलीजामा पहनाने की जरूरत होगी। जिसके लिये लोकतंत्र की सबसे छोटी इकाइयों ग्राम पंचायत से लेकर शहरी निकायों को भी शामिल करने की जरूरत होगी। दरअसल, जलवायु परिवर्तन से उपजा संकट केवल भारत की ही चुनौती नहीं है। यह एक वैश्विक संकट है। जो इस बात से पता चलता है कि पिछले तीन दशकों में नौ हजार से अधिक मौसमी आपदाओं ने पूरी दुनिया में आठ लाख से अधिक लोगों को असमय काल का ग्रास बनाया है। लेकिन इस संकट की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि इसकी सबसे बड़ी कीमत वे विकासशील व गरीब देश चुका रहे हैं, जिनकी वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में सबसे कम भूमिका रही है। दुर्भाग्य से विकासशील देश जहां इन संकटों की दृष्टि से जहां ज्यादा संवेनशील हैं, वहीं इससे मुकाबले के लिये उनके संसाधन सीमित हैं। उनके प्रतिरोध की क्षमता सीमित है। जिन्हें तत्काल व्यापक वित्तीय सहायता की जरूरत है। ऐसे में विकसित देशों का नैतिक दायित्व बनता है कि उनका सहयोग सिर्फ विकासशील देशों को वित्तीय व तकनीकी सहयोग तक सीमित न रहे। साथ ही वे अपने कार्बन उत्सर्जन में भी कमी लाएं।

जंक फूड को लेकर प्रभावी नीति की जरूरत

> जंक फूड के ज़्यादा इस्तेमाल से जीवनशैली संबंधी रोग बढ़ने के सबूत सामने आ रहे हैं। जो चिंताजनक है। इसे रोकने को ठोस नीतिगत उपाय जरूरी हैं। लेकिन नीति नियंताओं का इस पर निर्णय लेने में रवैया टालमटोल वाला है। दरअसल उद्योग जगत लॉबिंग, मार्केटिंग के जरिये इस संबंधी नियमन को कमजोर करता रहता है।

जानी-मानी मेडिकल पत्रिका, द लैंसेट ने इंसान के भोजन में अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड (अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ), आमतौर पर जिसे जंक फ़ूड कहा जाता है, के बढ़ते इस्तेमाल पर शोधपत्रों की एक श्रृंखला प्रकाशित की है। जिसमें बताया गया कि ये खाद्य पदार्थ कैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य को अनदेखा कर रहे हैं, दीर्घकालिक रोग पैदा कर रहे हैं, व सेहत असमानता बढ़ा रहे हैं।

अधिकांश खाद्य पदार्थ कुछ हद तक प्रसंस्करण से गुज़रते हैं-गेहूं पीसकर आटा बनाना और चावल व दाल की मिलिंग कर उन्हें पकाने या सुरक्षित रखने लायक बनाना। समस्या पैदा होती है जब कृषि उत्पाद कारखानों में अत्यधिक प्रोसेस किये जाते हैं, उन्हें स्वस्थ, कुदरती बताकर पैक, ब्रांडेड व विपणन किया जाता है। भोजन को प्रसंस्कृत करने और सुरक्षित रखने के परंपरागत तरीके जैसे सुखाना, ठंडा करना, फ्रीज़ करना, पाश्चराइजेशन, फर्मेंटेशन, बेकिंग और बॉटलिंग, खाने के कुदरती स्वरूप को काफी हद तक बनाए रखते हैं, लंबे समय कायम रखते हैं व स्वाद भी बढ़ाते हैं। दूसरी ओर, अल्ट्रा-प्रोसेसिंग भोजन पदार्थ के अवयवों में रासायनिक बदलाव कर देते हैं, उनमें एडिटिव्स मिलाकर रेडी-टू-कंज्यूम या लंबे समय बने रहने वाले उत्पाद में परिवर्तित कर देते हैं। अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड के ऐसे उदाहरणों में मीठे ड्रिंक्स, पैकेज्ड स्नैक्स, पोटैटो चिप्स, इंस्टेंट नूडल्स, रीकॉन्सटिट्यूटेड मीट, कुछ ब्रेकफ़ास्ट सीरियल्स और फ़्लेवर्ड योगर्ट शामिल हैं।

ऐसे उत्पादों के ज़्यादा इस्तेमाल से ताज़ा या कम प्रोसेस्ड भोज्य पदार्थ खुराक से बाहर हो जाता है और मोटापा, हृदय रोग, मधुमेह और अन्य सेहत समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। ये उत्पाद धरती की सेहत के लिए भी हानिकर हैं। इनके उत्पादन व परिवहन में बहुत ज़्यादा जैविक ईंधन खर्च होता है, और पैकेजिंग, जो ज़्यादातर प्लास्टिक की होती है, कचरा पैदा करती है।

द लैंसेट श्रृंखला ने कई अध्ययनों के सबूतों का

विश्लेषण किया है, जो दर्शाता है कि दुनिया भर में दीर्घकाल से प्रचलित भोजन करने के रिवायती ढंग की जगह अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाना ले रहा है, और यह चलन तेज़ी से उन इलाकों में भी फैल रहा है जहां जंक फ़ूड अभी ज़्यादा नहीं था। दूसरा, सबूत पुख्ता करता है कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाने के तौर-तरीके अपनाने से खुराक की गुणवत्ता काफी हद तक खराब हो जाती है। तीसरा, एकत्रित सबूत बताते हैं कि दीर्घकाल से कायम भोजन के ढंग की जगह अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड द्वारा ले लेना, दुनिया में खुराक से जुड़े, कई दीर्घकालिक रोगों के बढ़ते बोझ का एक मुख्य कारक है।

जंक फूड के ज़्यादा इस्तेमाल से जीवनशैली संबंधी रोगों की बढ़ती संख्या से जोड़ने वाले इतने सारे सबूत देखने के बावजूद, नीति नियंता और सरकारें निर्णय लेने में धीमी क्यों हैं? ऐसा इसलिए कि जंक फ़ूड इंडस्ट्री इतनी ताकतवर है कि यह लॉबिंग, मार्केटिंग और जन संपर्क के ज़रिए नियम व नीति निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित करती रहती है। द लैंसेट श्रृंखला में दिखाया गया डेटा हैरानीजनक है। 2024 में, शीर्ष तीन फ़ूड कॉर्पोरेशन-कोका कोला, पेप्सिको और मोंडेलेज़-ने विज्ञापन पर कुल 13.2 बिलियन डॉलर खर्च किए । यह विश्व स्वास्थ्य संगठन के कार्यकारी बजट का करीब चार गुना है। जंक फ़ूड मार्केटिंग का उद्देश्य सांस्कृतिक पसंद प्रभावित कर मांग पैदा करना और अस्वास्थ्यकारी भोजन पदार्थों का आम प्रचलन बनाना है। जंक फ़ूड कंपनियों को उनकी वैश्विक उत्पादन एवं विपणन सामर्थ्य राजनीतिक ताकत प्रदान करती है। मसलन, कोका-कोला की 200 देशों के बाजारों में रोज़ाना 2.2 बिलियन बोतलें या ड्रिंक्स केन बिकते हैं, जिसकी आपूर्ति 950 बॉटलिंग प्लांट संचालक 200 पार्टनर करते हैं। कंपनियां सरकारों के फैसलों को धमकी देकर प्रभावित करती हैं कि उनके धंधा शिफ्ट करने पर नौकरियां, निवेश हाथ से निकल जाएंगे।

सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कॉर्पोरेट जगत की राजनीतिक गतिविधियों की पहचान अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड संबंधी नुकसान कम करने हेतु असरदार पब्लिक नीतियां लागू करने में बड़ी बाधा के तौर पर की है। अतिविशाल कंपनियों द्वारा इस्तेमाल किए वाले ढंग तंबाकू, शराब उद्योग के तरीकों जैसे हैं। उनका मकसद विरोध से निपटना और नियामक रोकना है, और यह काम वे अपने आनुषंगिक गुटों और अपने पैसे से बनाए शोध साझेदारों के वैश्विक नेटवर्क के ज़रिए करते हैं। लॉबिंग के अलावा, वे सरकारी एजेंसियों में अपने लोगों की घुसपैठ करते हैं, कॉर्पोरेट अनुकूल प्रशासनिक मॉडल व नियामक को बढ़ावा देते हैं, और 'वैज्ञानिक भ्रम' बनाने की कोशिश करते हैं।

भारत में यह सब खाद्य नियामक एजेंसियों के काम के तरीके में साफ दिखता है। रोचक कि जंक फूड इंडस्ट्री के संगठनों ने खाद्य नियामक के साथ अलग-अलग स्वास्थ्य जागरूकता प्रचार प्रोजक्ट्स में साझेदारी कर रखी है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य का मखौल है। सरकार और नियामक, ज़्यादा वसा, चीनी व नमक वाले अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड की साफ परिभाषा बनाने से हिचकिचा रहे हैं। साल 2017 के नॉन-कम्युनिकेबल डिज़ीज़ पर राष्ट्रीय बहु-क्षेत्रीय कार्यकारी योजना कार्यक्रम में अधिक वसा, चीनी, नमक वाले खाद्य उत्पादों के विज्ञापन पर रोक के लिए विज्ञापन संहिता एवं पत्रकारिता आचरण नियमों में बदलाव करने की बात कही गई थी, लेकिन अभी तक लागू नहीं किया। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की स्थापना हुई तो थी किसानों की मदद के इरादे से, लेकिन काम करने लगी जंक फूड इंडस्ट्री को बढ़ावा देने और सब्सिडी बांटने का। समय आ गया है कि मंत्रालय प्रसंस्कृत और अत्यधिक-प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद के बीच अंतर करना शुरू करे।

लैंसेट श्रृंखला ज़ोर देती है कि फिलहाल पैक के अग्र-भाग पर चेतावनी ही अस्वास्थ्यकारी खाद्य उत्पादों को काफी हद तक कम करवाने का एकमात्र तरीका है। भारत में खाद्य उद्योग अब तक जंक फूड प्रोडक्ट्स पर सख्त लेबलिंग किए जाने को रोकने और बच्चों को जंक फ़ूड बेचने के नियम सरल बनाने में सफल रहा है। खाद्य नियामक प्राधिकरण ने उद्योग के प्रभाव में आकर, पैक पर ग्राफ़िक चेतावनी दर्शाने की बजाय उन्हें ज़्यादा माफिक स्टार-रेटिंग सिस्टम अपनाने की वकालत की। प्राधिकरण यह काम 'हितधारकों के साथ मशविरा किए जाने के बाद अपनाने' के नाम पर कर रही है, जबकि इन हितधारकों में ज़्यादातर के तार खाद्य उत्पादक उद्योग से जुड़े हैं। खाद्य उद्योग के पास अपने कई 'सिविल सोसाइटी' और 'उपभोक्ता संगठन' हैं। मानक निर्माण संस्थाएं भी खाद्य प्रशासन और नियामकों पर उद्योगपतियों का असर रोकने को पारदर्शी 'हितों का टकराव' नीति का पालन करें। अब साफ है कि सरकारी एजेंसियां और नियामक संस्थाएं अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड को परिभाषित करें, और इसे नियमों से चलाने के लिए नीतिगत ढांचा बनाएं। प्रसंस्कृत खाद्य और अत्यधिक-प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद बनाने वालों के बीच कोई भ्रम नहीं हो। एक बार प्रमाणिक नीति बन जाने के बाद, सरकारी एजेंसियां (स्वास्थ्य, कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, उपभोक्ता मामले, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय) और नियामकों को समन्वय से काम करना चाहिए। एक तरफ स्वास्थ्य मंत्रालय गैर-संक्रामक रोगों की बढ़ोतरी पर हायतौबा मचा रहा है, तो दूसरी ओर खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय जंक फूड निर्माताओं को सब्सिडी दे रहा है, इसका कोई अर्थ नहीं। सही भोजन और फिट रहना हर इंसान की ज़िम्मेदारी है, लेकिन साथ ही सरकार का भी ज़िम्मा है कि वह ऐसा माहौल बनाए जिसमें इंसान सही चुनाव कर सके।

इसलिए, स्वास्थ्यकर भोजन का माहौल बनाने के लिए सही सार्वजनिक नीति और उपभोक्ता के हक में खाद्य नियामक संहिता का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रेरणा

मनुष्य की गलतियों में छिपे जीवन के अनमोल रत्न

जीवन एक विचित्र जगह है—यह हमें उन रास्तों पर ले जाता है जहाँ हम कभी चलना नहीं चाहते, उन लोगों से मिलवाता है जिनसे हम मिलना नहीं चाहते, और उन अनुभवों में डाल देता है जिनके लिए हम तैयार नहीं होते। लेकिन इन सबके भीतर, इन सबकी तहों में, एक ऐसी चमक छिपी रहती है जो धीरे-धीरे हमारे व्यक्तित्व को तराशती है, हमें समझदार बनाती है, और हमारी आत्मा को परिपक्व करती है।

महान दार्शनिक अरस्तू का जीवन इसी रहस्य का उदाहरण है। जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने जीवन की गहरी सीखें किन महान और योग्य लोगों से प्राप्त कीं, तो प्रश्न पूछने वाला व्यक्ति किसी बड़े दार्शनिक, किसी ज्ञानी तपस्वी या किसी अप्रतिम गुरु का नाम सुनने की अपेक्षा कर रहा था। परंतु अरस्तू के होंठों पर उभर आई मुस्कान ने एक गहरे सत्य का संकेत दे दिया—वह सत्य यह कि जीवन के महानतम पाठ अक्सर उन लोगों से मिलते हैं जिनकी हम कल्पना भी नहीं करते।

अरस्तू ने शांत स्वर में कहा कि उनके गुरु कोई विद्वान, कोई शिक्षक, कोई विशेषज्ञ नहीं थे। उनके जीवन के बड़े-बड़े पाठ उन्हें उन साधारण लोगों से मिले, जिनकी गलतियों ने ही उन्हें सही रास्ते का बोध कराया। वह कपटी लोगों से ईमानदारी सीख पाए, क्योंकि छल की अनुभूति ने सत्य की महत्ता को भीतर गहराई से

बैठा दिया। जब उन्होंने किसी कृपण को देखा, जो हर छोटी चीज़ में बचत का धर्म निभाता था, वहाँ उन्होंने उदारता की वह मिठास महसूस की जिसे कृपण व्यक्ति शायद कभी जान ही नहीं सकता। बातूनी लोगों की अनवरत बोलती ज़ुबान ने उन्हें सिखाया कि मौन कितना सुन्दर, कितना प्रभावशाली और कितना गहरा होता है। वहीं असहिष्णु व्यक्तियों ने उन्हें धैर्य का अमूल्य रत्न थमाया—क्योंकि जब किसी के पास सहने की क्षमता नहीं होती, तब देखकर हमें समझ आता है कि सहनशीलता ही वह शक्ति है जो संबंधों को, परिस्थितियों को और भविष्य को सँभालती है। निर्दयी लोगों की कठोरता ने उनके दिल में दया का दीपक जगाया, और जल्दबाज़ व्यक्तियों ने उन्हें यह दिखाया कि जल्दबाज़ी कितनी बार हमें नुकसान पहुँचा देती है, जबकि धीरज ही सफलता का असली द्वार होता है।

जीवन की इस गहराई को समझने के लिए अक्सर हमें बड़ी किताबों की ज़रूरत नहीं पड़ती। यह गहराई हमारे आस-पास ही बिखरी होती है—उन लोगों में जो गलतियाँ करते हैं, जिनसे हम कभी-कभी क्रोधित हो जाते हैं, जिनकी आदतें हमें विचलित करती हैं। परंतु इन्हीं आदतों और कमियों के भीतर वह छुपा हुआ ज्ञान होता है, जो हमें अपने आप को बेहतर बनाने का अवसर देता है।

जीवन का असली सौंदर्य इसी बात में है कि यह हमें शिक्षक चुनने का अधिकार नहीं देता। यह स्वयं तय करता है कि कौन-सा व्यक्ति, कौन-सी परिस्थिति, कौन-सा क्षण हमें कौन-सी सीख देगा। कभी कोई अजनबी हमें धैर्य सिखा जाता है, कोई मित्र हमें विनम्रता सिखा जाता है, कोई अनजान व्यक्ति हमें प्रेम और करुणा सिखा जाता है।

हमारे जीवन का हर चेहरा, हर आवाज़, हर घटना हमारी कहानी लिखती है—चाहे हमें इसका एहसास हो या नहीं। किसी की गलती हमारे भीतर अच्छाई जगाती है, किसी की कड़वाहट हमें मधुर बनाती है, और किसी की कठोरता हमारे हृदय में दया का झरना खोल देती है।

जीवन का यही अद्भुत खेल है—जो व्यक्ति हमें परेशान करता है, वही हमें मजबूत भी बनाता है; जो हमें आहत करता है, वही हमें संवेदनशील भी बनाता है; जो हमें गलत दिशा में धकेलता है, वही हमें सही दिशा देखने में सक्षम भी बनाता है।

अरस्तू की कहानी हमें यही याद दिलाती है कि सीखने के लिए किसी महान गुरु का इंतज़ार मत करो। जीवन स्वयं हर पल तुम्हारे सामने एक-एक अध्यापक भेज रहा है—कभी तुम्हारे साथ खड़े होकर, कभी तुम्हारे खिलाफ खड़े होकर, और कभी तुम्हें अनदेखा करके भी।

बस इतना ज़रूरी है कि हम सीखने वाले बने रहें—क्योंकि जीवन में वही आगे बढ़ता है जो दूसरों की गलतियों का लाभ उठाकर स्वयं को सही दिशा में ढाल लेता है।

ज़हरीले पानी से प्रवासी पक्षियों के जीवन पर संकट

राजस्थान की साम्भर झील कई वर्षों से प्रवासी पक्षियों के लिए मौत का मैदान बनती जा रही है। वर्ष 2019 में यहां हजारों पक्षी मरे, पिछले वर्ष लगभग 200 और इस साल भी करीब 70 पक्षियों के शव मिले। मारे गए पक्षियों की जांच के लिए सेंटर फॉर एनिमल डिजीज रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक्स लैब, बरेली को भेजे गए सैंपलों से पुष्टि हुई कि इन मौतों का मुख्य कारण एवियन बोटुलिज़्म ही है, जो लगातार झील में पक्षियों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है।

भारत में विदेशी पक्षियों के लिए सबसे बड़े ठिकाने में से एक साम्भर झील में आने वाले मेहमानों की संख्या लगातार घट रही है। वैसे यहां कोई ढाई सौ प्रजातियों के पक्षी आते रहे हैं, लेकिन इस बार यह संख्या 110 ही रही है। सभी जानते हैं कि आर्कटिक क्षेत्र और उत्तरी ध्रुव में जब तापमान शून्य से चालीस डिग्री तक नीचे जाने लगता है, तो वहां के पक्षी भारत की ओर आ जाते हैं। ऐसा हजारों साल से हो रहा है, ये पक्षी किस तरह रास्ता पहचानते हैं, किस तरह हजारों किलोमीटर उड़कर आते हैं, विज्ञान के लिए भी अनसुलझी पहेली है। भारत की सबसे विशाल खारे पानी की झील 'साम्भर' का विस्तार 190 किलोमीटर, लंबाई 22.5 किलोमीटर है। इसकी अधिकतम गहराई तीन मीटर तक है। अरावली पर्वतमाला की आड़ में स्थित यह झील राजस्थान के तीन जिलों—जयपुर, अजमेर और नागौर तक विस्तारित है। अब यह झील 4700 वर्ग किमी में सिमट गई है। चूंकि भारत में नमक के कुल उत्पादन का लगभग नौ प्रतिशत- 196000 टन नमक यहां से निकाला जाता है, अतः नमक-माफिया भी यहां की ज़मीन पर कब्जा करता रहता है। इस विशाल झील के पानी में खारेपन का संतुलन बनाए रखने के लिए इसमें छोटी नदियों से मीठा पानी लगातार मिलता रहता है तो उत्तर में कांतली, पूर्व में बांदी, दक्षिण में मासी और पश्चिम में लूणी नदी में इससे बाहर निकला पानी जाता रहा है। दीपावली के बाद यहां विदेशी पक्षियों के झुंड आने शुरू हो जाते हैं।

पक्षियों में एवियन बॉटुलिज़्म नामक रोग मूल रूप से मांसाहारी नभचरों में होता है। यह बीमारी क्लोस्ट्रिडियम बॉट्यूलिज़्म नामक बैक्टीरिया की वजह से फैलती है। यहां साम्भर झील के जल में लगातार प्रदूषण की मात्रा बढ़ने से भी यह स्थान पक्षियों के लिए सुरक्षित नहीं रहा है। यहां पर पक्षियों की मौत का एक कारण 'हाईपर न्यूट्रिनिया' भी रहा है। नमकीन जल में सोडियम की मात्रा ज्यादा होने पर, पक्षियों के तंत्रिका तंत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। वे खाना-पीना छोड़ देते हैं। उनके पंख एवं पैरों में लकवा हो जाता है। अंत में प्राण निकल जाते हैं। अभी तक तो पक्षियों की प्रारंभिक मौत हाईपर न्यूट्रिनिया से ही हुई। बाद में उनमें एवियन बॉटुलिज़्म के जीवाणु विकसित हुए और ऐसे मरे पक्षियों को जब अन्य पक्षियों ने भक्षण किया तो बड़ी संख्या में उनकी मौत हुई। पक्षी विशेषज्ञ के मुताबिक साल 2025 में त्रासदी का प्रारंभ साम्भर के नामक वाले इलाके से हुआ है। औद्योगिक अपशिष्ट, जिसमें भारी धातुएं और रासायनिक तत्व होते हैं, पक्षियों की तंत्रिका प्रणाली को प्रभावित करता है। नमक की उच्च सांद्रता से पक्षियों के पंखों पर क्रिस्टल जम जाते हैं, जिससे हाइपोथर्मिया या डूबने से मौत हो जाती है।

वर्ष 2010 में भी पक्षियों की मौत के बाद गठित कपूर समिति की रिपोर्ट की सिफारिशों पर अमल नहीं हुआ। दो साल पहले भी हाई कोर्ट ने साम्भर झील को रामसर साइट घोषित किए जाने के बाद यानी 24 मार्च, 1990 के बाद इस झील पर दी गई लीज, निर्माण, अवैध कब्जों की जानकारी और झील को अतिक्रमण से बचाने के उपायों की भी जानकारी मांगी है। सरकार की आधी-अधूरी जानकारी के चलते झील का पानी और खराब होता गया। साम्भर झील के पर्यावरण के साथ लंबे समय से की जा रही छेड़छाड़ भी पक्षियों के यहां से मुंह मोड़ने का बड़ा कारण है। एक तो साम्भर साल्ट लिमिटेड ने नमक निकालने के ठेके कई कंपनियों को दे दिए जो मानकों की परवाह किए बगैर गहरे कुएं और झील के किनारे दूर तक नमकीन पानी एकत्र करने की खाई बना रहे हैं। वहीं परिशोधन के बाद गंदगी को इसी में डाल दिया जाता है। यहां किसी भी नगर कस्बे में घरों से निकलने वाले गंदे पानी को परिष्कृत करने की व्यवस्था नहीं है और हजारों लीटर गंदा-रासायनिक पानी हर दिन इस झील में मिल रहा है।

यह जलवायु परिवर्तन की त्रासदी है कि इस साल औसत से कोई 46 प्रतिशत ज्यादा पानी बरसा। इससे झील के जल ग्रहण क्षेत्र का विस्तार हो गया। चूंकि इस झील में नदियों से मीठा पानी की आवक और अतिरिक्त खारे पानी को नदियों में मिलने वाले मार्गों पर अतिक्रमण हो गए हैं, सो पानी में क्षारीयता का स्तर नैसर्गिक नहीं रह पाया। भारी बरसात के बाद यहां तापमान फिर से 27 डिग्री के पार चला गया। इससे पानी का क्षेत्र सिकुड़ा और उसमें नमक की मात्रा बढ़ गई, जिसका असर झील के जलचरों पर भी पड़ा।

उल्लेखनीय है कि साम्भर साल्ट लिमिटेड ने झील के एक हिस्से को एक रिसॉर्ट को दे दिया है। यहां का सारा गंदा पानी इसी झील में मिलाया जाता है। इसके अलावा कुछ सौर ऊर्जा परियोजनाएं और फिर तालाब की मछली का ठेका भी दिया हुआ है। जब पक्षी को ताजा मछली नहीं मिलती तो वह झील में तैर रही गंदगी को खाने लगता है। यह सब बातें भी पक्षियों के इम्यून सिस्टम के कमजोर होने व उनके सहजता से विषाणु के शिकार हो जाने का कारक हैं।

अभियान

सावन के पवित्र आकाश तले संतान सुख का चिरप्रतीक्षित

सावन का महीना शुरू होते ही पूरे वातावरण में एक अद्भुत आध्यात्मिकता फैल जाती है। जैसे धरती अपनी थकान उतारकर नई ऊर्जा से भर जाती है, वैसे ही मनुष्य का मन भी किसी भीतर गहरे बसे विश्वास से उजाला पाने लगता है। बारिश की बूंदें जब आकाश से गिरती हैं, तो लगता है मानो देवताओं का आशीर्वाद ही पृथ्वी पर उतर रहा हो। इसी दिव्यता के बीच सोमवार का दिन चमक उठता है—क्योंकि यह दिन भगवान शिव और माता पार्वती का होता है, वह दिव्य दंपति जिनकी कृपा से जीवन का हर अधूरा अध्याय पूर्णता पाता है।

हिंदू मान्यता में सावन सोमवार का व्रत ऐसा व्रत माना जाता है जिसके प्रभाव से जीवन के सबसे गहरे दुख मिट सकते हैं। विशेषकर वह दुख, जो किसी दंपति के मन में वर्षों से चुभता रहता है—संतान की कमी का दुख। जिन घरों में किलकारी नहीं गूँजती, वहाँ एक अदृश्य खालीपन रहता है। इस खालीपन को भरने की आशा में दंपति सावन सोमवार को शिव-पार्वती की शरण में जाते हैं और मन ही मन प्रार्थना करते हैं कि उनके जीवन में भी मातृत्व और पितृत्व का उजाला आए।

सदियों से चली आ रही यह मान्यता केवल धार्मिक भावना नहीं, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक सत्य है कि संतान का वरदान शिव-पार्वती की संयुक्त कृपा से ही पूर्ण होता है। शिव सृष्टि के आधार हैं, और माता पार्वती सृष्टि के विस्तार की शक्ति। जब दोनों प्रसन्न होते हैं, तब ईश्वर स्वयं परिवार के भाग्य में नया जीवन जोड़ देते हैं।

लेकिन इस दिव्य कृपा को आकर्षित करने के लिए कुछ विशेष मन्त्र और स्तोत्र हैं, जिन्हें सावन सोमवार के दिन पढ़ना अत्यंत शुभ माना गया है। उनमें से दो सबसे प्रभावी हैं—संतान प्राप्ति गणेश स्तोत्र और अभिलाषाष्टक स्त्रोत। गणेश वह शक्ति हैं जो किसी भी नए जीवन की शुरुआत का प्रतीक हैं। वे विघ्नों को दूर करते हैं और इच्छाओं को स्वरूप प्रदान करते हैं। संतान प्राप्ति गणेश स्तोत्र उस ऊर्जा को जगाता है जो परिवार में नई किलकारी को आमंत्रित कर सके।

वहीं अभिलाषाष्टक स्त्रोत मन की गहरी इच्छाओं का मधुर संकल्प है। इसमें साधक अपनी हर अभिलाषा को शिव के चरणों में समर्पित कर देता है। इस स्तोत्र का पाठ सावन सोमवार को करने से भक्त और भगवान के बीच का भावमय पुल बेहद मजबूत हो जाता है। माना जाता है कि उस दिन की गयी प्रार्थना सीधी भगवान शिव तक पहुँचती है—और शिव कभी भी अपने भक्तों की विनम्र प्रार्थना को अनसुना नहीं करते। जब दंपति श्रद्धा, संयम और सच्चे मन से शिव-पार्वती की पूजा करते हैं, तब उनके मन की प्रार्थना तारों की तरह ब्रह्मांड में चमक उठती है। बेलपत्र, गंगाजल, धतूरा, अक्षत और शांत स्वर में किये गये मन्त्र—ये सब मिलकर उस वातावरण को बनाते हैं जहाँ ईश्वर का आशीर्वाद सहजता से उतरने लगता है। माता पार्वती के सामने जब दंपति साथ बैठकर प्रण लेते हैं कि वे नए जीवन का स्वागत प्रेम और जिम्मेदारी से करेंगे, तब ऐसा माना जाता है कि माता स्वयं उनके घर में मातृत्व का दिव्य आशीर्वाद स्थापित करती हैं।

इस पूजा और स्तोत्र-पाठ के पीछे केवल धार्मिक शक्ति नहीं, बल्कि गहरी मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा भी होती है। जब मन एक साथ आशा और भक्ति में डूबता है, तब भीतर से निकलने वाली वो प्रार्थना ब्रह्मांड के नियमों से टकराती नहीं, बल्कि उनके साथ तालमेल बिठाकर आगे बढ़ती है। इसी मेल से जीवन में चमत्कार उत्पन्न होते हैं।

अनगिनत परिवारों की कहानियाँ सावन की इसी सत्यता को प्रमाणित करती हैं। अनेक दंपतियों ने वर्षों के दुख के बाद ठीक सावन सोमवार की पूजा और इन स्तोत्रों के पाठ के बाद अपने घर में संतान रूपी वरदान को पाया। कुछ ने बताया कि उन्हें ऐसे लगा मानो भगवान उनकी प्रतीक्षा का अंत कर रहे हों—जैसे किसी अदृश्य हाथ ने उनके जीवन में नया अध्याय लिख दिया हो।

सावन का यह पवित्र माह हमें यही बताता है कि ईश्वर कभी किसी की पीड़ा को अनदेखा नहीं करते। बस मन में श्रद्धा का दीप जलाना होता है और भक्ति के मार्ग पर चलना होता है। शिव-पार्वती संतान सुख देने वाले वे करुणामयी देव हैं, जिनके सामने किया गया एक सच्चा प्रण जीवन को संपूर्ण बना सकता है।

सावन की हर बूंद में कृपा है, हर हवा में आशा है, और हर सोमवार में वह दिव्य शक्ति है जो मनोकामनाओं को वरदान में बदल देती है। जो दंपति सच्चे मन से भक्ति करते हैं, उनके घर एक दिन वह किलकारी अवश्य गूँजती है जो पूरे जीवन को अर्थपूर्ण बना देती है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

चिंतन शिविर-2025, धरमपुर, वलसाड

कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की गुजरात को मेजबानी मिलने पर ऐतिहासिक सफलता का चिंतन शिविर में हर्षोल्लासपूर्वक स्वागत किया गया

▸▸ ढोल–नगाड़े, आतिशबाजी तथा गाजे–बाजे के बीच मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री का ऊष्मापूर्ण स्वागत किया गया

▸▸ मुख्यमंत्री व उप मुख्यमंत्री ने एक-दूसरे का मुँह मीठा कराकर हर्ष व्यक्त किया

▸▸ श्री नरेन्द्र मोदी का विजन है कि कोई देश यदि कर सकता है, तो भारत भी कर ही सकता है; इसी विश्वास से आज हम हर क्षेत्र में दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं : मुख्यमंत्री

▸▸ श्री नरेन्द्र मोदी ने 20 वर्ष पहले जो परिश्रम किया था, उसका फल आज हमें मिला है : उप मुख्यमंत्री

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात को कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की मेजबानी मिलने पर इस ऐतिहासिक सफलता का धरमपुर स्थित श्रीमद् राजचंद्र आश्रम में आयोजित 'सामूहिक चिंतन से सामूहिक विकास की ओर' थीम आधारित चिंतन शिविर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप-मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की गरिमामय उपस्थिति में हर्षोल्लासपूर्वक स्वागत किया गया।

कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 के आयोजन की बोली में भारत को मिली जीत के चलते गुजरात को कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की मेजबानी मिलने पर इस अविस्मरणीय घड़ी का स्वागत करने के लिए आश्रम के पैवेलियन में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के पहुँचते ही ढोल-नगाड़ों की गूँज, आतिशबाजी तथा गाजे-बाजे के साथ ऊष्मापूर्ण स्वागत किया गया।

स्कूल के विद्यार्थियों ने आदिवासी नृत्य प्रस्तुत कर इस क्षण का स्वागत किया।

इस ऐतिहासिक सफलता के उत्सव का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी गुजरात को मिली, जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन और दूरदर्शिता का परिणाम है। यह हम सभी

के लिए गौरव का क्षण है। श्री नरेन्द्र मोदी का विजन है कि दुनिया का कोई देश यदि कर सकता है, तो भारत भी कर ही सकता है, इसी विश्वास से आज हम हर क्षेत्र में विश्व के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि श्री नरेंद्र मोदी ने गेम्स के लिए जो इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार किया है, उसी के कारण आज यह ऐतिहासिक सफलता मिली है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी तथा गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के प्रयासों के परिणामस्वरूप कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 के भारत में आयोजन को मंजूरी मिली है। उनके मार्गदर्शन में इन गेम्स द्वारा भारत की धरती पर दुनिया का स्वागत करने और देश को स्पोर्ट्स हब बनाने के लिए हम तैयार हैं।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा, "यह भारत देश के लिए गौरव की बात है। कॉमनवेल्थ गेम्स को 100 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, ऐसे में उसके नेतृत्व का अवसर गुजरात को प्राप्त हुआ, यह गौरवशाली क्षण है। श्री नरेन्द्र मोदी ने 20 वर्ष पहले जो परिश्रम किया था, उसका फल आज हमें मिला है। खेल विभाग का टीम टीमवर्क, प्रेजेंटेशन की सफलता के जरिये गुजरात और अहमदाबाद को मेजबानी मिली है, जिसके लिए सभी को अभिनंदन देता हूँ।" श्री संघवी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में हर क्षेत्र में सफलता मिल रही है। जिस तरह कॉमनवेल्थ की मेजबानी मिली, उसी प्रकार ओलंपिक की मेजबानी भी मिले, इसके लिए प्रयास जारी हैं। यह सिर्फ शुरुआत है। मुख्यमंत्री ने टीम लीडर के रूप में उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। पूरे भारत को गर्व हो, इस प्रकार गुजरात की टीम कार्य कर रही है।

इस खुशी के अवसर पर सभी ने एक-दूसरे का मुँह मीठा कराया। आतिशबाजी के साथ इस मेजबानी का धूमधाम से जश्न मनाया गया।

भारत और गुजरात का विकास आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचे, यह संदेश देने के लिए मंत्रिमंडल द्वारा गुब्बारे उड़ाए गए।

इस अवसर पर मंत्रिमंडल के सभी सदस्य, मुख्य सचिव श्री मनोज कुमार दास, आईएएस अधिकारी उपस्थित रहें।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने धरमपुर में 'वोकेलशनल ट्रेनिंग सेंटर' का दौरा किया : वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर द्वारा मुख्यमंत्री का अभिवादन समारोह आयोजित

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸ राज्य के आदिवासी क्षेत्रों में पीपीपी मोड पर 8 अत्याधुनिक वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर स्थापित किए गए

▸▸ दो दशक पहले अंबाजी से उमरगाम तक के आदिवासी बेल्ट में एक भी साइंस कॉलेज नहीं था, जबकि आज दो दर्जन साइंस, आर्ट्स और कॉमर्स कॉलेज संचालित हैं

▸▸ मुख्यमंत्री ने प्रशिक्षु विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए

▸▸ कौशल, नवाचार और कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है, भारत के युवाओं में ये तीनों गुण और क्षमताएं मौजूद हैं : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ भाग के साथ पीपीपी मोड से जुड़ा प्रमुख स्वामी वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, मुख्यमंत्री ने जनभागीदारी के क्षेत्र में जुड़ाव का प्रमाण पत्र प्रदान किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को धरमपुर में 'प्रमुख स्वामी वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर-पीएसवीटीसी' का दौरा कर प्रशिक्षु विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

प्रमुख स्वामी महाराज की जयंती के अवसर पर वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर की ओर से मुख्यमंत्री का अभिवादन समारोह आयोजित किया गया।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज ने पूरी दुनिया में शांति, प्रेम और करुणा के सद्गुणों का संदेश फैलाया है। इतना ही नहीं, स्वामीनारायण संप्रदाय ने भारतीय ऋषि संस्कृति को बचाने का भगीरथ कार्य किया है। उन्होंने युवाओं को व्यसन मुक्त और सुसंस्कारी के साथ-साथ आत्मनिर्भर बनाने के लिए वर्षों से महाअभियान चला रहे स्वामीनारायण संप्रदाय की सराहना की।

उन्होंने कहा कि कौशल, नवाचार और कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। भारत के युवाओं में मौजूद इन तीनों गुणों और क्षमता का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने गर्व से कहा कि हमारा युवा 'स्किल, विल और जील' यानी कौशल, इच्छाशक्ति और जोश के बल पर पत्थर से भी पानी निकालने में समर्थ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दो दशक पहले अंबाजी से उमरगाम तक के आदिवासी बेल्ट में एक भी साइंस कॉलेज नहीं था, जबकि आज पिछले दो दशकों में दो दर्जन साइंस, आर्ट्स और कॉमर्स कॉलेज कार्यरत हैं। आज इन क्षेत्रों में शिक्षा, सुविधाओं, योजनाओं और आर्थिक गतिविधियों का दायरा लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य के आदिवासी क्षेत्रों में पीपीपी मोड पर 8 अत्याधुनिक वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर स्थापित किए गए हैं, साथ ही तीन लाख से अधिक आदिवासी युवाओं को ऐसे सेंटरों, आईटीआई और केवीके के जरिए प्रशिक्षण और प्लेसमेंट मिला है। आदिवासी क्षेत्र धरमपुर में संचालित प्रमुख स्वामी वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर इसका उत्तम उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी ने डिग्री-आधारित नौकरी की आशा में निर्भर रहने के बजाय युवाओं को कौशल विकास की राह दिखाई है। इस अभिनव मार्ग ने लाखों युवाओं को दक्ष और कार्यकुशल बनाया है। धरमपुर पीएसवीटीसी में लगभग 30 विभिन्न ट्रेड्स कार्यरत हैं, जिनमें से इस संस्थान के शुरुआती तीन वर्षों में ही 500 से अधिक प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार मिला है।

मुख्यमंत्री ने स्वदेशी अपनाकर आत्मनिर्भर बनने का अनुरोध करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के लिए स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत का आह्वान किया है। आप सभी के सहयोग से यह संकल्प पूरा होकर रहेगा।

आदिजाति मंत्री श्री नरेशभाई पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने अपने मुख्यमंत्रित्व काल के दौरान आदिवासी समाज के विकास के लिए वनबंधु कल्याण योजना लागू की, जिसके परिणामस्वरूप आदिवासियों का सर्वांगीण विकास संभव हो पाया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार आदिवासी समाज के युवाओं को पायलट, डॉक्टर और इंजीनियर बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। सरकार की सहायता से आदिवासी समाज के युवा पायलट बनकर आकाश में उड़ान भर रहे हैं।

वित्त मंत्री श्री कनुभाई देसाई ने कहा कि सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आर्थिक विकास के क्षेत्र में अनेक योजनाएं लागू कर आदिवासी समाज के उत्थान और विकास की प्रतिबद्धता दिखाई है। इस अवसर पर सांसद श्री धवल पटेल, विधायक श्री अरविंद पटेल, मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) में सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, तीर्थल बीएपीएस के कोठारी स्वामी पू. विवेक स्वरूपजी, पू. चिन्मय स्वामी, कलेक्टर भव्य वर्मा, जिला संगठन प्रमुख श्री हेमंत कंसारा सहित कई अग्रणी, विद्यार्थी और नगरजनों सहित बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, भावनगर मंडल द्वारा बाल मंदिर एवं किड्स हट स्कूल में स्वास्थ्य जांच शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, भावनगर मंडल द्वारा बच्चों के स्वास्थ्य संरक्षण एवं जागरूकता को प्रोत्साहित करने हेतु दिनांक 26 नवंबर 2025 एवं 28 नवंबर 2025 को क्रमशः किड्स हट एवं बाल मंदिर स्कूल में स्वास्थ्य जांच शिविरों का सफल आयोजन किया गया। इन शिविरों का मुख्य उद्देश्य विद्यालयीन विद्यार्थियों के संपूर्ण स्वास्थ्य मूल्यांकन तथा प्रारंभिक अवस्था में रोग पहचान कर उचित परामर्श प्रदान करना था। पहला स्वास्थ्य शिविर 26 नवंबर, 2025 को किड्स हट स्कूल में आयोजित किया गया, जिसमें 170 बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की गई। इनमें से 20 बच्चों में दांतों में कैविटी, 01 बच्चे में बुखार तथा 01 बच्चे में खांसी की शिकायत दर्ज की गई। दूसरा स्वास्थ्य शिविर 28 नवंबर, 2025 को बाल मंदिर स्कूल में आयोजित किया गया, जिसमें 92 बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की गई। इनमें से 15 बच्चों में दांतों की कैविटी, 02 बच्चों में कान संबंधी समस्या, 01 बच्चे में आंखों की समस्या, 01 बच्चे में त्वचा संक्रमण तथा 01 बच्चे में गले का संक्रमण पाया गया।

दोनों शिविरों में पाए गए स्वास्थ्य लक्षणों के प्रति विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को जागरूक किया गया तथा आगे की विस्तृत जांच एवं उपचार हेतु बच्चों को मंडल रेलवे अस्पताल, भावनगर परा (DRH BVP) में परामर्श हेतु सुझाव दिया

गया। इस स्वास्थ्य शिविर के चिकित्सा दल में डॉ. संदीप – DMO, BVP एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. निमेष एवं उनकी चिकित्सकीय टीम शामिल रही।

इस स्वास्थ्य शिविर के आयोजन में पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल की अध्यक्ष – श्रीमती शालिनी वर्मा, सेक्रेटरी – श्रीमती माया त्रिपाठी, सांस्कृतिक इंचार्ज – श्रीमती वाणी मैडम, ट्रेजरर – श्रीमती वंदना पाटीदार, किड्स हट स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती भाविका शुक्ल, बाल मंदिर स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती रूपल चूड़ासमा, श्री ब्रिजेश पटेल (वेलफेयर इंस्पेक्टर-भावनगर मंडल) एवं समिति के सदस्य का विशेष सहयोग रहा।

इन शिविरों के सफल आयोजन से विद्यालयीन विद्यार्थियों में स्वास्थ्य चेतना को बढ़ावा मिला तथा प्रारंभिक स्तर पर पहचानी गई कई स्वास्थ्य समस्याओं के शीघ्र उपचार का मार्ग प्रशस्त हुआ। पश्चिम रेलवे महिला कल्याण समिति ने भविष्य में भी इसी प्रकार के कल्याणकारी एवं स्वास्थ्य संवर्धनात्मक कार्यक्रम निरंतर आयोजित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

राजकोट मंडल में डबल ट्रैक कार्य के चलते रेल यातायात होगा प्रभावित

(जीएनएस)। राजकोट मंडल में स्थित लाखाबावल-पीपली-कानालुस सेक्शन में डबल ट्रैक कार्य के चलते 01.12.2025 से लेकर 15.01.2026 तक रेल यातायात प्रभावित होगा। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः

आंशिक रूप से रद्द की गयी ट्रेनें:

ट्रेन नं 59206/59205 पोरबंदर-कानालुस-पोरबंदर लोकल 01.12.2025 से लेकर 30.12.2025 तक पोरबंदर से चलकर गोप जाम एवं गोप जाम से चलकर पोरबंदर तक जाएगी तथा गोप जाम-कानालुस के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

ट्रेनों का स्टोपेज रद्द होनाः

ट्रेन नं 19209/19210 भावनगर-ओखा-भावनगर एक्सप्रेस 01.12.2025 से लेकर 15.01.2026 तक लाखाबावल और पिपली स्टेशनों पर नहीं रुकेगी।

रेल यात्रियों से निवेदन है कि वे उपरोक्त फेरबदल को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा प्रारम्भ करें और ट्रेनों के परिचालन संबंधित नवीनतम अपडेटस की जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन करें ताकि किसी प्रकार कि असुविधा ना हो।

पश्चिम रेलवे द्वारा मुंबई सेंट्रल एवं इंदौर के बीच स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा उनकी यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से मुंबई सेंट्रल एवं इंदौर के बीच स्पेशल ट्रेन के फेरों को विशेष किराये पर विस्तारित किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार हैः

ट्रेन संख्या 09085/09086 मुंबई सेंट्रल – इंदौर (त्रि-साप्ताहिक) स्पेशलः

ट्रेन संख्या 09085 मुंबई सेंट्रल–इंदौर स्पेशल प्रत्येक सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को 23.20 बजे मुंबई सेंट्रल से प्रस्थान करती है और अगले दिन 13.00 बजे इंदौर पहुँचती है। इस ट्रेन के फेरों को 28 नवंबर से 31 दिसंबर, 2025 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09086 इंदौर–मुंबई सेंट्रल स्पेशल प्रत्येक मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को 17.00 बजे इंदौर से प्रस्थान करती है और अगले दिन 07.10 बजे मुंबई सेंट्रल पहुँचती है। इस ट्रेन के फेरों को 29 नवंबर से 01 जनवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा, दाहोद, रतलाम और उज्जैन स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, एसी 2-टियर तथा एसी 3-टियर कोच हैं।

ट्रेन संख्या 09085 एवं 09086 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 29 नवम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पालनपुर–अहमदाबाद खंड पर स्थित जगुदन स्टेशन यार्ड में पुल संख्या 985 के पुनर्निर्माण हेतु यातायात प्रभावित

(जीएनएस)। अहमदाबाद मंडल के पालनपुर–अहमदाबाद खंड पर स्थित जगुदन स्टेशन यार्ड में अप मेन लाइन पर किलोमीटर 727/23-25 के बीच स्थित पुल संख्या 985 के पुनर्निर्माण का कार्य किया जा रहा है। यह कार्य कट-एंड-कवर पद्धति से तथा रोड क्रेन द्वारा प्रीकास्ट आरसीसी बॉक्स स्थापित कर किया जा रहा है। सुरक्षा एवं आवश्यक इंजीनियरिंग कार्यों को ध्यान में रखते हुए दिनांक 30 नवम्बर 2025 (रविवार) को निम्नलिखित यात्री ट्रेनों को आंशिक रूप से निरस्त तथा पुनर्निर्धारित किया गया हैः

1. आंशिक रूप से निरस्त ट्रेने

▸▸ ट्रेन संख्या 20960 वडनगर – वलसाड एक्सप्रेस दिनांक 30.11.2025 को वडनगर – गांधीनगर कैपिटल के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 14821 जोधपुर – साबरमती एक्सप्रेस दिनांक 30.11.2025 को आबू रोड – साबरमती के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 14822 साबरमती – जोधपुर एक्सप्रेस दिनांक 01.12.2025 को साबरमती – आबू रोड के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 20959 वलसाड – वडनगर एक्सप्रेस दिनांक 30.11.2025 को गांधीनगर कैपिटल – वडनगर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

2. पुनर्निर्धारण

▸▸ ट्रेन संख्या 20485 जोधपुर – साबरमती एक्सप्रेस दिनांक 30.11.2025 को जोधपुर से 02.00 घंटे की देरी से रवाना होगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 69207 गांधीनगर कैपिटल – वरेठा एक्सप्रेस दिनांक 30.11.2025 को गांधीनगर कैपिटल से 01.00 घंटे की देरी से रवाना होगी।

▸▸ ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

ट्रेन में हुए स्टोन पेल्टिंग मामले का सफल खुलासा - एक नाबालिग बालक की पहचान

(जीएनएस)। 24 नवंबर, 2025 को रीबड़ा – भक्तिनगर रेल सेक्शन के मध्य चल रही सवारी गाड़ी संख्या 19119 (गांधीनगर कैपिटल – वेरावल एक्सप्रेस) के ऑन-ड्यूटी ट्रेन मैनेजर पर किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा पत्थर फेंके जाने से उन्हें चोट आई तथा ट्रेन को रीबड़ा स्टेशन पर 06 मिनट एवं गोंडल स्टेशन पर 07 मिनट विलंब हुआ। इस संबंध में RPF जूनागढ़ द्वारा अज्ञात व्यक्ति के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया।

मामले के त्वरित खुलासे हेतु निरीक्षक जूनागढ़, निरीक्षक क्राइम ब्रांच भावनगर तथा SIB/JND की संयुक्त टीम गठित की गई। टीम द्वारा 25 नवंबर 2025 को घटनास्थल के आसपास गहन पूछताछ एवं गुप्त निगरानी की गई। इस दौरान रेलवे लाइन से लगभग 50–60 मीटर दूरी पर तीन बालक संदिग्ध रूप से घूमते पाए गए।

पूछताछ में एक बालक सुशांत कुमार पुत्र पिंटू मंडल, आयु 13

वर्ष, निवासी बुध नगर, गली नंबर 3, शापर, राजकोट द्वारा 24 नवंबर 2025 को अपने दो साथियों के साथ पटरियों के पास पत्थर फेंकने तथा ट्रेन गुजरते समय अंतिम डिब्बे पर पत्थर मारने की बात स्वीकार की गई। बालकों को उनके अभिभावकों की उपस्थिति में पुनः पूछताछ की गई तथा घटनास्थल पर ले जाकर पुष्टि की गई। इसके पश्चात आवश्यक कानूनी कार्रवाई करते हुए उक्त नाबालिग को बाल संरक्षण अधिनियम के तहत कानूनी प्रक्रिया पूर्ण कर अभिभावकगण के सुपुर्द किया गया।

रेलवे की अपील

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा की रेलवे संपत्ति एवं रेल परिचालन में बाधा डालना दंडनीय अपराध है। रेलवे प्रशासन आम नागरिकों से अपील करता है कि रेल पटरियों के आसपास बच्चों को खेलने न दें तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत रेलवे हेल्पलाइन 139 या नजदीकी RPF/GRP पोस्ट पर दें।

दो वर्षों में 13.5 लाख से अधिक पर्यटकों ने शिवराजपुर बीच का किया दीदार

▸▸ शिवराजपुर गुजरात का पहला 'ब्ल्यू फ्लैग' बीच, साफ पानी और स्कूबा डाइविंग के लिए लोकप्रिय स्थल

▸▸ वीजीआरसी के आयोजन से शिवराजपुर और स्थानीय पर्यटन क्षेत्र के महत्व को उजागर किया जाएगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : श्री कृष्ण नगरी द्वारका से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित शिवराजपुर समुद्र तट अपनी अनूठी विशेषताओं के कारण अंतरराष्ट्रीय फलक पर चमक उठा है। यह बीच स्थानीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है। वर्ष 2023 और 2024 में 13 लाख 58 हजार से अधिक सैलानी शिवराजपुर बीच को देखने के लिए पहुंचे। इस प्रकार स्थानीय रोजगार को प्रोत्साहन देकर गुजरात का पर्यटन क्षेत्र राज्य के आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है और राज्य की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

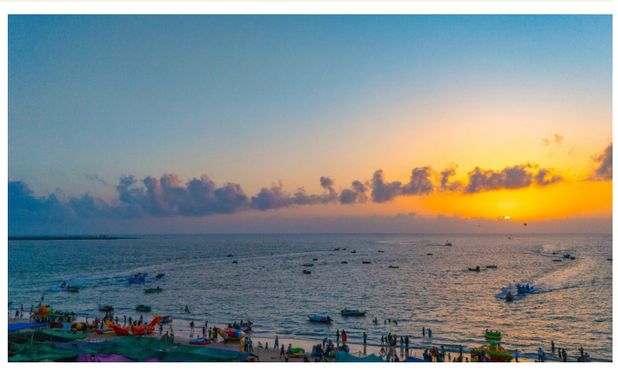

गुजरात पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (टीसीजीएल) के अनुसार, वर्ष 2023 में 6,78,647 और 2024 में 6,80,325 पर्यटकों ने शिवराजपुर समुद्र तट के दीदार किए। 2020 में ब्लू फ्लैग प्रमाणन प्राप्त होने के बाद शिवराजपुर बीच गुजरात का पहला ब्लू फ्लैग बीच बन गया है। यह प्रमाण पत्र पानी की गुणवत्ता, पर्यावरण संरक्षण, सुरक्षा और सेवाओं सहित कुल 32 मानकों के आधार पर दिया जाता है। यहां स्कूबा डाइविंग, बोटिंग और जेट स्कीइंग जैसी स्पोर्ट्स गतिविधियों की सुविधाएं भी उपलब्ध है।

शिवराजपुर की सफलता 'देखो अपना देश' पहल के साथ सुसंगत है। इस पहल की शुरुआत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनवरी, 2020 में की थी, जिसका उद्देश्य पांच श्रेणियों के अंतर्गत घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देना है। इन पांच श्रेणियों में आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं विरासत, प्रकृति एवं वन्यजीव, एडवेंचर और अन्य शामिल हैं। इस देशव्यापी अभियान को आगे बढ़ाने में शिवराजपुर समुद्र तट का महत्वपूर्ण योगदान है।

राज्य सरकार ने इस क्षेत्र में पर्यटन और स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कुछ बड़ी पहलें भी शुरू की हैं। क्षेत्र-विशिष्ट निवेश आकर्षित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) का आयोजन किया जा रहा है। इस कॉन्फ्रेंस का दूसरा संस्करण 8-9 जनवरी को राजकोट में आयोजित होगा, जो कच्छ और सौराष्ट्र क्षेत्र पर केंद्रित होगा। इस कॉन्फ्रेंस में शिवराजपुर जैसे पर्यटन आकर्षणों को उजागर किया जाएगा, जो दर्शाता है कि राज्य प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक विरासत का योजनाबद्ध तरीके से उपयोग करके 'विकसित गुजरात@2047' से 'विकसित भारत@2047' के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है।

राज्य सरकार का बारहवाँ चिंतन शिविर : धरमपुर, दूसरा दिन

सामूहिक चिंतन से सामूहिक विकास की मंशा साकार करने वाले पाँच ग्रुप डिस्कशन्स में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी तथा मंत्रीगण सहभागी हुए

विकसित गुजरात के लिए क्षमता निर्माण, पोषण एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य, हरित ऊर्जा एवं पर्यावरण, सार्वजनिक सुरक्षा एवं सेवा क्षेत्र में गुजरात को 2047 तक और सुदृढ़ बनाकर विकसित भारत@2047 के लिए अग्रसर रखने का सामूहिक मंथन हुआ

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार का तीन दिवसीय बारहवाँ चिंतन शिविर वलसाड जिले के आदिजाति बहुल क्षेत्र धरमपुर स्थित श्रीमद् राजचंद्र आश्रम में आयोजित हो रहा है।

सामूहिक चिंतन से सामूहिक विकास के ध्येय के साथ आयोजित हो रहे इस चिंतन शिविर के शुक्रवार को दूसरे दिन के पहले सत्र के ग्रुप डिस्कशन्स में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, मंत्रीगण तथा मुख्य सचिव श्री एम. के. दास सहभागी हुए।

विकसित गुजरात के लिए क्षमता निर्माण तथा व्यक्तिगत कामकाज मूल्यांकन, संवर्गों के पुनर्गठन तथा निरंतर प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण के लिए प्लेटफॉर्म प्रदान करने जैसे विषयों पर आयोजित चर्चा सत्रों में कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, श्रम एवं कौशल विकास मंत्री श्री कुँवरजीभाई बावळिया, कृषि राज्य मंत्री श्री रमेशभाई कटारा तथा उच्च एवं तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री श्री त्रिकमलभाई छांगा, शिविरार्थी सचिवों, जिला कलेक्टरों, जिला विकास अधिकारियों तथा सुपर न्युमरी असिस्टेंट कलेक्टरों ने विकसित गुजरात@2047 के लिए गुजरात की स्थापना के 2035 में मनाए जाने वाले 75वें स्थापना दिवस तक के पिछले एक दशक में क्षमता निर्माण से राज्य को मानव संसाधन विकास और वर्कफोर्स की कैपेसिटी बिल्डिंग के प्लेटफॉर्म प्रदान कर भविष्योन्मुखी टेक्नोलॉजी से सज्ज मानव बल तैयार करने की दिशा में चिंतन किया। पोषण एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी चर्चा सत्र में सहभागियों ने राज्य में माता मृत्यु दर तथा शिशु मृत्यु दर, एनीमिया एवं पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में वेस्टिंग, अंडरवेट तथा स्टंटिंग में राज्य की स्थिति और केंद्र व राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ ऐसे प्रभावितों को देकर उनकी पोषण स्थिति सुधारने के लिए ढाँचागत सुविधाओं का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण, टेक्नोलॉजी आधारित सुधारों, महत्वपूर्ण सूचकांकों पर फोकस करने जैसे जन सुख-समृद्धि को छूने वाले विषयों पर चर्चा की।

इस सत्र में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री प्रद्युमन वाजा, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी, स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल्लभाई पानशेरिया, कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्य मंत्री श्री स्वरूपजी ठाकोर तथा आईएएस अधिकारी सहभागी हुए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2070 तक नेट जीरो तथा 2030 तक 500 गीगावाट नॉन-फोसिल ऊर्जा के उयोग सहित मिशन लाइफ तथा एक पेड़ माँ के नाम जैसे पर्यावरणोन्मुखी विचार दिए हैं। हरित ऊर्जा तथा पर्यावरण में ग्रीन पावर के उपयोग सत्र में प्रधानमंत्री के विचारों को अधिक से अधिक ग्रीन एनर्जी के उत्पादन तथा उपयोग एवं गवर्नेंस में ग्रीन एनर्जी से पर्यावरण संरक्षण की मौजूदा कार्ययोजना तथा ऊर्जा आत्मनिर्भरता एवं विश्वसनीयता तथा क्लाइमेट चेंज के प्रभावों, सर्कुलर इकनॉमी पर गहन चिंतन-मंथन किया गया।

इस चर्चा सत्र में ऊर्जा मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल, वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, जल संसाधन एवं जलापूर्ति राज्य मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल, राज्य मंत्री डॉ. मनीषा वकील, श्री कौशिकभाई वेकरिया, श्री प्रवीणभाई माली तथा आईएएस अधिकारी सहभागी हुए।

शिविर में आयोजित सार्वजिक सुरक्षा (पब्लिक सेफ्टी) के चर्चा सत्र में सड़कों, पुलों, सरकारी भवनों जैसे इन्फ्रास्ट्रक्चर में नागरिक सुरक्षा के लिए कार्यक्षम तथा विश्वसनीय स्ट्रक्चर्स, जलापूर्ति इन्फ्रास्ट्रक्चर, सीवेज व्यवस्था की पुनर्स्थापना, फायर सेफ्टी तथा इमर्जेंसी सर्विसेज जैसे लोगों को व्यापक रूप से स्पर्श करने वाले विषयों में टेक्नोलॉजी इंटीग्रेशन, ट्रांसपरेंसी, कलेक्टिव रिस्पॉन्सिबिलिटी, जागृति अभियान जैसे आयोजनों की वर्तमान स्थिति तथा भविष्योन्मुखी आयोजनों के संबंध में ग्रुप डिस्कशन किया गया।

इस चर्चा सत्र में आदिजाति विकास मंत्री श्री नरेशभाई पटेल, शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, वरिष्ठ आईएएस अधिकारी, जिला कलेक्टर तथा जिला विकास अधिकारी सहभागी हुए।

सेवा क्षेत्र की वृद्धि एवं विविधीकरण से जुड़े चर्चा सत्र में रोजगार, आईटी तथा आईटीईएस सेक्टर ग्लोबल कैपेसिटी सेंटर, वित्तीय सेवाओं, उत्पादन संबंधी सेवाओं, बंदरगाह संचालित सेवाओं, गिग, केयर तथा ग्रीन इकोनॉमी से जुड़ी सेवाओं में वर्तमान क्षेत्रीय परिदृश्य तथा इस क्षेत्र में की गई प्रमुख पहलों और भावी आयोजन से गुजरात को सेवा क्षेत्र में भी अग्रिम बनाने की दिशा में इस सत्र में सहभागी हुए सभी ने अपने सुझाव दिए तथा मत व्यक्त किए। इस चर्चा सत्र में वित्त एवं शहरी विकास मंत्री श्री कनुभाई देसाई, खेल राज्य मंत्री डॉ. जयरामभाई गामित, वित्त राज्य मंत्री श्री कमलेश पटेल, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन राज्य मंत्री श्री संजयसिंह महिडा, आदिजाति विकास राज्य मंत्री श्री पी. सी. बरंडा, शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रीवाबा जाडेजा तथा मुख्यमंत्री के मुख्य सलाहकार डॉ. हसमुख अढिया सहभागी हुए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत@2047 का जो संकल्प दिया है, उसे बारहवें चिंतन शिविर के दूसरे दिन के ये चर्चा सत्र विकसित गुजरात से पूरा करने के लिए और गति देंगे।

पश्चिम रेलवे पर रविवार, 30 नवम्बर, 2025 को दिवसकालीन ब्लॉक नहीं

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे का मुंबई सेंट्रल एवं माहिम स्टेशनों के बीच रात्रिकालीन ब्लॉक रेल पथ, सिगनलिंग प्रणाली तथा ऊपरी उपस्करों के रख-रखाव हेतु पश्चिम रेलवे द्वारा शनिवार/रविवार अर्थात 29/30 नवम्बर, 2025 के बीच की मध्यरात्रि को 00.15 बजे से 04.15 बजे तक मुंबई सेंट्रल एवं माहिम स्टेशनों के बीच अप एवं डाउन फास्ट लाइन पर 4 घंटे का जम्बो ब्लॉक लिया जायेगा। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार ब्लॉक अवधि के दौरान फास्ट लाइन की सभी ट्रेनों का परिचालन सांताक्रुज़ एवं चर्चगेट स्टेशनों के बीच धीमी लाइनों पर किया जाएगा।

इस ब्लॉक की विस्तृत जानकारी संबंधित स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध है। यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपरोक्त ब्लॉक व्यवस्था को ध्यान में रखें।

इसके फलस्वरूप पश्चिम रेलवे उपनगरीय खंड पर रविवार, 30 नवम्बर, 2025 को कोई दिवसकालीन ब्लॉक नहीं रहेगा।

पश्चिम रेलवे 30 नवंबर, 2025 को मुंबई साइक्लोथॉन के लिए दो स्पेशल लोकल ट्रेनें चलाएगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे मुंबई साइक्लोथॉन 2025 के प्रतिभागियों की सुविधा के लिए 30 नवंबर, 2025 को विरार से बांद्रा के लिए 01.30 बजे और 03.00 बजे दो स्पेशल लोकल ट्रेनें चलाएगी। साइक्लोथॉन के प्रतिभागियों को नीचे दी गई स्पेशल ट्रेनों में साइकिल ले जाने की इजाज़त होगी। इन स्पेशल ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैं:

दिनांक 29 नवम्बर 2025 से 1 दिसम्बर 2025 तक रेलवे क्रॉसिंग संख्या 29 C (अहमदपुरा फाटक) बंद रहेगा

(जीएनएस)। अहमदाबाद मंडल के नांदोल दहेगाम–रखीयाल सेक्शन के बीच स्थित रेलवे लेवल क्रॉसिंग संख्या 29 C (अहमदापुरा फाटक) पर रख-रखाव, रबराइजेशन तथा ओवरहॉलिंग कार्य के लिए 29 नवम्बर 2025 को प्रातः 09:00 बजे से 01 दिसम्बर 2025 को सायं 19:00 बजे तक बंद रहेगा।

ईस अवधि के दौरान मार्ग सुरक्षा एवं कार्य निष्पादन को ध्यान में रखते हुए संबंधित मार्ग पर सभी प्रकार के वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा। इस दौरान सड़क यातायात को अहमदपुरा गाँव रेलवे ब्रिज LHS-24 B, नांदोल दहेगाम रेलवे स्टेशन फाटक 28 B, दहेगाम–गांधीनगर रोड अंडर ब्रिज-20 A वैकल्पिक मार्गों से डायवर्ट किया जाएगा।

दिनांक 29 नवंबर 2025 से 08 दिसंबर 2025 तक केवल रात्रि 23.00 बजे से प्रातः 06.00 बजे तक शाहीबाग अंडरपास यातायात हेतु बंद रहेगा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर स्थित अंडरपास संख्या 731 A (कि.मी. 498/28-30), शाहीबाग अंडरपास, दिनांक 29 नवंबर 2025 से 08 दिसंबर 2025 तक केवल रात्रि 23.00 बजे से प्रातः 06.00 बजे तक मरम्मत एवं रखरखाव कार्य के कारण यातायात हेतु बंद रहेगा। सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए इस अवधि के दौरान वैकल्पिक मार्ग निम्नानुसार रहेगा :

1.दिल्ली दरवाजा और सुभाषब्रिज की ओर से आने वाला ट्राफिक, जो एयरपोर्ट-गांधीनगर की ओर जाना चाहता है, वह वाहन सुभाषब्रिज के अंत में शिलालेख फ्लैट से होकर रिवरफ्रंट का उपयोग करके रिवरफ्रंट रोड डफनाला से होकर एयरपोर्ट और गांधीनगर की ओर आवागमन कर सकेंगे।

2.एयरपोर्ट-गांधीनगर से आने वाला ट्राफिक डफनाला रिवरफ्रंट का इस्तेमाल कर अलग-अलग मार्गो पर जा सकता है। इसके अलावा असारवा, गिरधरनगर, दिल्ली दरवाजा, कालूपुर की ओर जाने के लिए शाहीबाग के रास्ते महाप्रज्ञजी ब्रिज का उपयोग करके मुख्य सड़कों पर जा सकेंगे।

अलास्का की धरती फिर कांपी: 6.0 तीव्रता के भूकंप ने थैंक्सगिविंग की सुबह जगाया, पर बड़ी तबाही से बचा प्रदेश

(जीएनएस)। अलास्का का आसमान सामान्य था, बर्फीली हवाएँ वैसे ही बह रही थीं, लेकिन गुरुवार की सुबह 8 बजकर 11 मिनट पर धरती ने एक बार फिर अपने अंदर की बेचैनी बाहर उगल दी। दक्षिण-मध्य अलास्का का एंकोरेज महानगरीय क्षेत्र अचानक जोर से हिल उठा। अमेरिकी भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण (USGS) ने तुरंत ही पुष्टि की कि भूकंप की तीव्रता 6.0 थी और इसका केंद्र विलो से लगभग 26 मील दक्षिण-पश्चिम तथा करीब 43 मील की गहराई में था। थैंक्सगिविंग की शांत सुबह अचानक डर और घबराहट में बदल गई। कई घरों में लोग नींद में थे, कई अपने त्योहार की तैयारियों में लगे हुए थे—और तभी दीवारें चरमराईं, शेल्फें हिलने लगीं, और बर्तन तथा सजावटी सामान गिरने की आवाज़ हर घर में गूंज उठी।

अलास्का डेली न्यूज की रिपोर्ट बताती है कि प्रारंभिक झटके इतने मजबूत थे कि दूर स्थित वाल्डेज और फेयरबैंक्स जैसे इलाकों में भी जमीन थरथरा उठी। हालांकि, राहत की बात यह रही कि अब तक किसी बड़े नुकसान या जनहानि की खबर नहीं है। बिजली आपूर्ति और संचार तंत्र भी अधिकतर क्षेत्रों में सामान्य बना रहा।

नेशनल सुनामी सेंटर ने भी स्पष्ट घोषणा की कि इस भूकंप से कोई सुनामी खतरा नहीं है, जिससे समुद्र किनारे बसे समुदायों ने एक लंबी सांस ली।

अलास्का के इतिहास में बड़े भूकंप कोई नई बात नहीं। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार यह क्षेत्र दुनिया के सबसे संवेदनशील भूकंप ज़ोन में से एक है, जहां लगभग हर वर्ष 7.0 या उससे अधिक तीव्रता का एक बड़ा भूकंप आने की संभावना रहती है। वर्ष 2021 के बाद यह अब तक का सबसे तीव्र भूकंप माना जा रहा है। इसके पहले 30 नवंबर 2018 का 7.1 तीव्रता वाला भूकंप पूरे क्षेत्र को भारी नुकसान पहुंचाकर गया था—सड़कें उखड़ी थीं, इमारतें चटख गई थीं और लोग महीनों तक भय में जीते रहे थे।

फियो ने राष्ट्रपति श्री पुतिन के दौरे के दौरान इंडिया-रूस बिज़नेस फ़ोरम से पहले विकास और अवसर पर बल दिया

(जीएनएस)। नई दिल्ली, 28 नवंबर, 2025: फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइज़ेशन्स (फियो) रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन के 4-5 दिसंबर 2025 को होने वाले भारत के सरकारी दौरे और साथ में होने वाले इंडिया-रूस बिज़नेस फ़ोरम का स्वागत करता है, जो भारत और रूस के बीच आर्थिक और व्यापार सहयोग को बढ़ाने और गहरा करने के लिए सही समय पर प्लेटफ़ॉर्म है।

हाल के ट्रेड डेटा से पता चलता है कि अप्रैल-अगस्त 2025-26 के समय में रूस को भारत का निर्यात 1.84 बिलियन डॉलर था, जबकि इम्पोर्ट 26.45 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया। इससे पहले रूस के साथ वस्तु व्यापार 2024-25 में रिकॉर्ड 68.7 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया था, जिसमें लगभग 4.88 बिलियन डॉलर का निर्यात और 63.84 बिलियन डॉलर का आयात शामिल था। पिछले चार सालों में, 2021 से शुरू होकर, दोनों देशों के बीच वस्तु व्यापार पाँच गुना से ज़्यादा बढ़ा है। यह लगभग 13 बिलियन डॉलर था और 2024-25 में यह 68 बिलियन डॉलर हो जाएगा।

यह ज़बरदस्त बढ़ोतरी मज़बूत ऊर्जा और वस्तु आधारित रिश्तों को दिखाती है, लेकिन रूस के पक्ष में व्यापार असंतुलन काफ़ी बढ़ गया है। फियो के अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन का मानना है कि फार्मास्यूटिकल्स, इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स, एग्रो-प्रोडक्ट्स, ऑटो और ऑटो-कंपोनेंट्स और आईटी सर्विसेज़ जैसे सेक्टर में रूस को निर्यात की बहुत संभावना है, जिनकी बदलते मार्केट डायनामिक्स के कारण बहुत ज़्यादा मांग है। श्री रल्हन ने आगे कहा कि इसके अलावा, रूस से कई पश्चिमी कंपनियों के निकलने से भारतीय निर्यातकों के लिए अलग-अलग सेक्टर में खाली जगह भरने का एक बड़ा मौका बना है। साथ ही, दोनों देशों ने 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 100 बिलियन डॉलर तक बढ़ाने का एक बड़ा दीर्घकालिक लक्ष्य भी बताया है। फियो अध्यक्ष ने यह भी कहा कि द्विपक्षीय निवेश अभी भी काफी हैं और पिछले कुछ सालों में बढ़े हैं, 2025 तक 50 बिलियन डॉलर का लक्ष्य है। भारत में रूस का निवेश ऑयल और गैस, पेट्रोकेमिकल्स, बैंकिंग, रेलवे और स्टील जैसे सेक्टर में है, जबकि रूस में भारत का निवेश मुख्य रूप से ऑयल और गैस और फार्मास्यूटिकल्स में है।

श्री रल्हन ने कहा कि इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर (आईएनएसटीसी) जैसे लॉजिस्टिक्स कॉरिडोर के फिर से शुरू होने और बढ़ने से भी देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार ज़्यादा किफायती हुआ है। उन्होंने दोहराया कि राष्ट्रपति श्री पुतिन के दौरे के दौरान होने वाला इंडिया-रूस बिज़नेस फोरम, भारतीय निर्यातकों, निवेशकों और रूसी निवेशकों के लिए ऊर्जा पर आधारित व्यापार से ज़्यादा डायवर्सिफाइड, स्थायी व्यापार और इन्वेस्टमेंट रिलेशनशिप की ओर बढ़ने का एक अहम मौका है।

फियो अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने कहा "यह बिज़नेस फ़ोरम भारत-रूस व्यापार के लिए एक अहम समय पर हो रहा है। जहाँ व्यापार की मात्रा में बढ़ोतरी हमारे आर्थिक संबंधों की मज़बूती दिखाती है, वहीं अब हमें इस रफ़्तार का फ़ायदा उठाकर नॉन-ऑयल सेक्टर — इंजीनियरिंग सामान, केमिकल, फ़ार्मास्यूटिकल्स, खेती, कपड़ा, चमड़ा, जेम्स और ज्वेलरी और वैल्यू-एडेड मैन्युफ़ैक्चर्ड सामान में डायवर्सिफ़ाई करना चाहिए। फ़ोरम को बैलेंस्ड, लंबे समय के व्यापार और आपसी निवेश का रास्ता बनाना चाहिए।"

फियो को उच्च मूल्य वाली वस्तुओं फार्मास्यूटिकल्स, रसायन, इंजीनियरिंग सामान, साथ ही सेवाओं (आईटी/आईटीईएस, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा) के भारतीय निर्यात के विस्तार में विशेष रूप से मजबूत संभावनाएं दिखती हैं, साथ ही भारत के बुनियादी ढांचे, विनिर्माण, हरित ऊर्जा, रेलवे, खनन और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में रूसी निवेश को प्रोत्साहित करता है। इसके अलावा, संस्थागत सुविधा और द्विपक्षीय व्यापार मिशनों के साथ रूस को एक बाजार के रूप में तलाशने के लिए एमएसएमई , निर्यातकों और एसएमई का समर्थन करने से भारत के निर्यात सेक्टर को और बढ़ावा मिलेगा।

फियो ने मरीन प्रोडक्ट्स, डेयरी और फार्मास्यूटिकल्स जैसे खास सेक्टर में भारतीय निर्यातकों के सामने आने वाली बाजार पहुंच की चुनौतियों को दूर करने की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया है। फेडरेशन इस बात पर ज़ोर देता है कि इन श्रेणियों की रूसी बाजार में मज़बूत और लगातार मांग बनी हुई है, और रूस की तरफ से रेगुलेटरी और प्रक्रियागत रुकावटों को दूर करने को प्राथमिकता देने का आग्रह करता है जो अभी उनके प्रवेश को सीमित करती हैं। इन उच्च संभावना वाली उत्पाद श्रेणियों के लिए आसान एक्सेस को सुगम बनाते हुए, फियो अध्यक्ष ने भरोसा जताया कि इससे न सिर्फ़ द्विपक्षीय व्यापार को विविधीकृत और पुनर्संतुलित करने में मदद मिलेगी, बल्कि दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक आर्थिक सहयोग को मज़बूत करने में भी मदद मिलेगी।

दिल्ली में जोमैटो–ब्लिंकिट का 'सरकारी योजना सुविधा शिविर': डिलीवरी पार्टनर्स के जीवन में सुरक्षा और स्थिरता का नया दरवाज़ा खुला

(जीएनएस)। नई दिल्ली की ताज़ी सुबह में जब शहर की सड़कें अभी आधी नींद में थीं, जोमैटो और ब्लिंकिट के डिलीवरी पार्टनर्स एक अलग ही उम्मीद लेकर कतार में खड़े थे। काम की आपाधापी में अक्सर अपने लिए समय न निकाल पाने वाले ये साथी आज किसी ऑर्डर या पिकअप के लिए नहीं बल्कि अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए इकट्ठा हुए थे। राजधानी में आयोजित तीसरे 'सरकारी योजना सुविधा शिविर' ने उनके लिए वह मौका तैयार किया, जिसकी उन्हें लंबे समय से जरूरत थी—सरकारी कल्याणकारी योजनाओं तक आसान, सीधी और भरोसेमंद पहुंच।इस शिविर का विचार बहुत साधारण दिखने के बावजूद अत्यंत महत्वपूर्ण है। डिलीवरी पार्टनर्स—जो हर मौसम, हर परिस्थिति में हमारी दहलीज तक सेवाएं पहुंचाते हैं—अक्सर उन योजनाओं से दूर रह जाते हैं जो उनके जीवन को सुरक्षित करने के लिए बनाई गई हैं। इसी खाई को पाटने के लिए जोमैटो और ब्लिंकिट ने यह पहल शुरू की है, जिसमें सरकारी विभागों

के साथ साझेदारी कर डिलीवरी पार्टनर्स को बीमा, स्वास्थ्य सुरक्षा, पेंशन और सामाजिक कल्याण से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। दिल्ली में हुए इस शिविर में श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के उप-सचिव मिनहाज अहमद मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे। उनकी मौजूदगी ने इस पहल को एक सरकारी विश्वास भी दिया। उन्होंने वहीं खड़े-खड़े देखा कि कैसे अलग-अलग काउंटरों पर बैठकर विशेषज्ञ और प्रतिनिधि डिलीवरी पार्टनर्स को योजनाओं में पंजीकरण कराने में मदद कर रहे थे—किसी काउंटर पर आयुष्मान भारत का फॉर्म भरता दिख रहा था, तो कहीं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के लिए दस्तावेज़ जुटाए जा रहे थे। कई साथी ई-श्रम पोर्टल में अपना पंजीकरण पूरा करने की प्रक्रिया में थे। पूरी व्यवस्था इतनी सहज थी कि 340 से अधिक डिलीवरी पार्टनर्स कुछ ही घंटों में इन योजनाओं से जुड़ पाए।

उप-सचिव मिनहाज अहमद ने शिविर के बीचोंबीच खड़े होकर अपनी संतुष्टि व्यक्त की और कहा कि यह पहल डिलीवरी पार्टनर्स के जीवन में वास्तविक बदलाव ला सकती है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि देशभर में इसके माध्यम से और भी ज्यादा श्रमिक इन योजनाओं का लाभ उठाएंगे और सामाजिक सुरक्षा का घेरा और मज़बूत होगा। वहीं, ईटरनल की चीफ सस्टेनेबिलिटी ऑफिसर अंजली रवि कुमार के चेहरे पर यह संतोष साफ झलक रहा था कि उनकी कंपनी द्वारा उठाया गया यह कदम सिर्फ एक आयोजन भर नहीं बल्कि कई परिवारों की जीवनरेखा को मजबूत करने वाला प्रयास था। उन्होंने कहा कि डिलीवरी पार्टनर्स की भलाई हमेशा से उनकी प्राथमिकता रही है और इस तरह के शिविर उनके जीवन की चुनौतियों को कम करने का सबसे प्रभावी तरीका बन सकते हैं।

खगड़िया में सियासत पर गोली की चोट: बीजेपी नेता दिलीप कुमार पर दिनदहाड़े हमला, पत्नी को अंतिम पुकार-"मुझे बचा लो"

(जीएनएस)। बिहार के खगड़िया में शुक्रवार की दोपहर एक ऐसी दहशत लेकर आई, जिसकी गूंज अभी भी पूरे जिले की हवा में तैर रही है। कुछ पल पहले तक अपनी मोटरसाइकिल से घर लौटते बीजेपी नेता दिलीप कुमार को अंदाजा भी नहीं था कि त्रिभुवन पुलिया के पास इंतज़ार कर रही दो मोटरसाइकिलों पर बैठे छह हमलावर उनकी जिंदगी और मौत के बीच की दूरी तय करने वाले हैं। सड़कों पर सामान्य-सी हलचल थी, खेतों की तरफ से आती हवा में गांव की महक तैर रही थी, लेकिन कुछ ही क्षणों बाद इस शांति को गोलियों की गड़गड़ाहट चीरने वाली थी।दिलीप कुमार की बाइक पुलिया के पास धीमी ही हुई थी कि अचानक पीछे से आई मोटरसाइकिल उनकी बिलकुल बगल में आकर रुकी। इससे पहले कि उनका मन खतरे का कोई संकेत पकड़ पाता, हमलावरों ने पिस्तौलें निकाल लीं और एक पल में सीने को निशाना बनाकर फायरिंग शुरू कर दी। चार से पांच राउंड गोलियों ने हवा को चीरते हुए

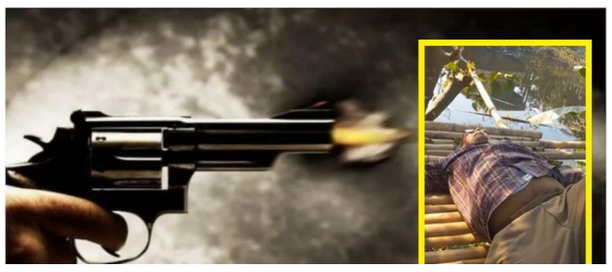

उनकी छाती में घाव खोल दिए और वह वहीं सड़क पर गिर पड़े। गोली चलने की आवाज पूरे इलाके में फैलते ही माहौल डर और अफरा-तफरी में बदल गया। खेतों की ओर भागते बच्चे, दुकानों के शटर गिराते व्यापारी, खौफ से कांपते चेहरे—हर तरफ दहशत ही दहशत थी।

ज़मीन पर घायल पड़े दिलीप कुमार कुछ सेकंड तक होश में थे। दर्द उनकी सांसों को तोड़ रहा था, लेकिन वह अपने मोबाइल तक पहुंचने में सफल हुए। उनकी उंगलियों ने जैसे आखिरी उम्मीद थाम ली—उन्होंने अपनी पत्नी का नंबर मिलाया। फोन उठते ही दूसरी तरफ उनकी पत्नी की आवाज आई, लेकिन उधर से सुनाई दी एक कांपती हुई, कमजोर, almost टूटती आवाज—"जल्दी आओ किसी ने मुझे गोली मार दी है मुझे बचा लो"। इसके बाद जैसे वक्त ही थम गया और कॉल कट गया। यह वो क्षण था जिसे कोई भी पत्नी कभी सुनना नहीं चाहती। उनकी आवाज ने दिल दहला दिया। वह बिना समय गंवाए रोते हुए पुलिस को कॉल करती रहीं और घरवालों के साथ मौके की ओर दौड़ीं। रास्ते में उनका हर कदम, हर सांस बस एक ही ख्याल कह रही थी—काश वह समय पर पहुंच जाएं। उधर स्थानीय लोग, जो कुछ क्षण पहले तक चीखते हुए भाग रहे थे, अब संभलकर नेता को उठाने लगे और अस्पताल की ओर ले गए।

पुलिस को खबर मिली तो पूरा प्रशासन हरकत में आ गया। गणगौर थाने के अधिकारी, फॉरेंसिक टीम और बाद में वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। पुलिया के पास बिखरे खोखे, खून के धब्बे और लोगों के डरे चेहरे साफ दिखा रहे थे कि हमला किसी निजी झगड़े की वजह नहीं बल्कि एक सुनियोजित वारदात थी। थाना प्रभारी सुंदर पासवान के अनुसार दिलीप कुमार का इलाज चल रहा है और उनकी स्थिति गंभीर बनी हुई है। पुलिस की टीम गठित कर दी गई है जो हमलावरों की पहचान और गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी कर रही है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है और हर चश्मदीद से पूछताछ की जा रही है।

झारखंड के मोरहाबादी मैदान में रोजगार का ऐतिहासिक दिन : सीएम हेमंत सोरेन ने 9,000 युवाओं को एक साथ सौंपे नियुक्ति पत्र

(जीएनएस)। रांची की सर्द सुबह में मोरहाबादी मैदान कुछ अलग ही चमक लिए हुए था। दूर-दूर तक फैली कुर्सियों की कतारें, मंच की भव्य सजावट, और हजारों युवाओं के उत्साह से भरे चेहरे इस बात की गवाही दे रहे थे कि आज का दिन झारखंड के इतिहास में दर्ज होने वाला है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के दूसरे कार्यकाल का एक वर्ष पूरे होने पर आयोजित इस राज्य स्तरीय समारोह में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर—करीब 9,000 युवाओं को—विभिन्न सरकारी विभागों में नियुक्ति पत्र सौंपे गए। भीड़ में बैठे युवाओं के चेहरे पर चमक थी, घरों में उम्मीदों की लौ जग चुकी थी और राज्य सरकार के लिए यह पल उपलब्धियों की कहानी सुनाने का मौक़ा था। जब मुख्यमंत्री मंच पर पहुंचे तो तालियों की आवाज मैदान में गूंजने लगी। मंच पर मंत्री राधाकृष्ण किशोर, दीपक बिरुवा, चमरा लिंडा, संजय प्रसाद यादव, इरफान अंसारी, हफीजुल हसन, दीपिका पांडे सिंह, योगेंद्र प्रसाद, सुदिव्य कुमार, शिल्पी नेहा तिर्की और

राज्य के मुख्य सचिव अविनाश कुमार सहित तमाम अधिकारी मौजूद थे। माहौल में एक ऐसी ऊर्जा थी जैसे हजारों सपनों को पंख मिलने वाले हों।

नियुक्ति वितरण का सिलसिला शुरू होते ही युवाओं के चेहरों पर मुस्कान फैल गई। किसी के हाथ में उप समाहर्ता की नियुक्ति, किसी के पास पुलिस उपाधीक्षक बनने का प्रमाण, किसी ने राज्य कर अधिकारी का पद पाया, तो कोई दंत चिकित्सा अधिकारी या श्रम अधीक्षक बन रहा था। सहायक आचार्य के 8,500 पदों के लिए नियुक्ति पत्र दिए जाने से शिक्षा क्षेत्र में भी नई हलचल दर्ज हुई। यह अपने आप में वह दृश्य था जो लंबे समय तक राज्य के रोजगार इतिहास में मील का पत्थर बना रहेगा।

जब मुख्यमंत्री ने माइक संभाला तो उनकी आवाज़ में खुशी, जिम्मेदारी और भावुकता—तीनों का अद्भुत मिश्रण था। उन्होंने बताया कि बीते एक वर्ष में की गई 16,000 सरकारी नियुक्तियों और 8,000 निजी क्षेत्र की नौकरियों ने राज्य के युवाओं के लिए नए अवसर खोले हैं। इतना ही नहीं, 2024-25 में भी 25,000 नियुक्तियाँ की गईं, जो नौकरी की दिशा में चल रहे प्रयासों को मजबूती प्रदान करती हैं। उन्होंने गर्व के साथ कहा कि झारखंड के 25 साल के इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी नियुक्ति एक ही मंच से संभव हुई है, और यह सिर्फ शुरुआत है।

लेकिन इस खुशी के बीच मुख्यमंत्री के मन में एक भावनात्मक दर्द भी छिपा था, जिसे उन्होंने शब्दों में बयां किया। उन्होंने कहा कि आज यदि दिशोम गुरु शिबू सोरेन यहां होते तो उन्हें अपने राज्य के युवाओं को इस तरह आगे बढ़ते देखकर अत्यंत खुशी होती। पूरा मैदान उस पल कुछ क्षण के लिए शांत हो गया, मानो राज्य का हर नागरिक उस स्मृति को महसूस कर रहा हो।

इसके बाद मुख्यमंत्री ने उन चुनौतियों की ओर इशारा किया जिनसे सरकार को दो-चार होना पड़ा। उन्होंने स्पष्ट कहा कि विपक्ष न केवल आरोप लगाता है बल्कि अदालतों में जाकर नियुक्ति प्रक्रिया को रोकने की कोशिश भी करता है। उन्होंने युवाओं से सवाल किया—क्या किसी से पैसे लिए गए? क्या किसी को पैरवी करनी पड़ी? जब हजारों अभ्यर्थियों ने एक स्वर में "नहीं" कहा तो मुख्यमंत्री के चेहरे पर संतोष की एक चमक उभरी। उन्होंने बताया कि नियुक्ति पाने वालों में बड़ी संख्या महिलाओं की है—सहायक आचार्य में 40%, सिविल सेवाओं में 30% महिलाएं चयनित हुई हैं।